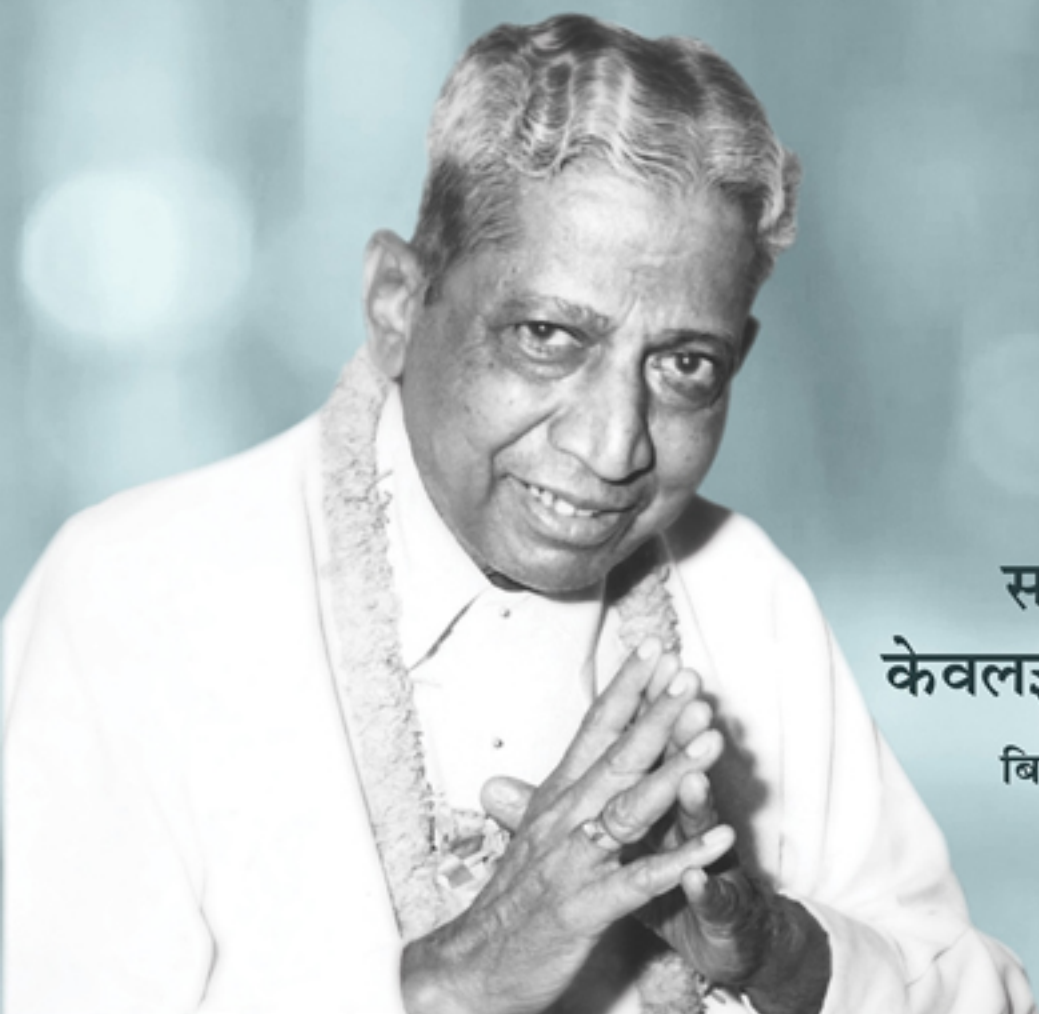


सितम्बर 2018

दादावाणी

Retail Price ₹ 15



समझ ही
केवलज्ञान की
बिगनिंग है।

उल्टा वर्तन
(चाय पी लेते हैं)

+

उल्टी समझ
(चाय पीनी चाहिए)

=

उल्टा वर्तन
(भविष्य में फिर से चाय पीएंगे)

उल्टा वर्तन
(चाय पी लेते हैं)

+

सुल्टी समझ
(चाय नहीं पीनी चाहिए)

=

सुल्टा वर्तन
(भविष्य में चाय छूट जाएगी)

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : 13 अंक : 11

अखंड क्रमांक : 155

सितम्बर 2018

Editor : Dimple Mehta

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Offset

B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Total 32 pages (including cover)

© 2018

Dada Bhagwan Foundation.

All Rights Reserved

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक

भारत : 150 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञान की माता 'समझ'

संपादकीय

अक्रम विज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) के महात्माओं को ज्ञानविधि में आत्मज्ञान मिला। उसमें क्या प्राप्त हुआ? क्या अंदर से 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का रटन शुरू हो गया? क्या वह रटन ही प्रतीति है? प्रतीति से आगे, शुद्धात्मा के अनुभव की ओर जाने से कौन रोकता है? वहाँ पर क्या प्रकृति अपनी भूमिका निभाती है? आज का वर्तन पिछले जन्म का सारांश है और आज हमें नया ज्ञान मिला है इसलिए उन दोनों के बीच में संघर्ष चलता रहता है। दादाश्री कहते हैं कि व्यवहार में आप परवश हो। आपको नहीं करना हो फिर भी हो जाता है। वह डिस्चार्ज के रूप से है। उसमें घबराना नहीं है। हम उससे सहमत नहीं हैं।

दादाश्री कहते हैं कि 'हम डिस्चार्ज वर्तन को नहीं देखते हैं।' यदि आप सिर्फ इस बात को ही पकड़ लो तो आपका अधूरा रह जाएगा। अनुभव नहीं होने देगा। साथ ही, दूसरी तरफ वर्तन एक फिल्म है। यदि उसके लिए क्लेश करेंगे तो जागृति चूक जाएँगे। अतः अब चूकना नहीं है और बात को समझ लेना है।

ज्ञान की माता समझ है और वह समझ ज्ञानी से प्राप्त होती है। समझ अर्थात् दर्शन। आपको तो सिर्फ समझना ही है। जैसे-जैसे समझते जाएँगे वैसे-वैसे समाता (स्वरूप में स्थिर होता) जाएगा। ज्ञान मिलने के बाद आवरण टूटते हैं, कर्तापना छूटता है। कारण तो सभी खत्म हो गए, अब ये परिणाम बाकी हैं। उन परिणामों को किस तरह से भोगना है? अतः समझ लो!

मोक्ष कब होगा? तब, जब आपका ज्ञान और समझ भूल रहित हो जाएँगे। आप अपनी ही भूलों की वजह से रुके हुए हो। मैं चंद हूँ, इसका पति हूँ... भूलों की ऐसी कितनी ही परंपराएँ हैं! मात्र 'मैं कौन हूँ', सिर्फ इसी की समझ नहीं होने की वजह से मोक्ष रुका है और 'मैं कौन हूँ' की समझ से मोक्ष है!

प्रस्तुत अंक में दादाश्री कहते हैं कि समझ तो केवलज्ञान की बिगिनिंग (शुरुआत) है... और समझ ही प्रतीति से अनुभव तक पहुँचने के मार्ग की जरूरी कड़ी है। समझ तो कितने ही जन्मों की पूँजी है। समझ हमेशा ज्ञान में स्थिर करती है। अंतिम अंश तक ज्ञान में स्थिर हो जाए, तो वही मोक्ष है। बुद्धि से जो उफनता है, वह समझ से स्थिर हो जाता है।

इसी जन्म में सही समझ प्राप्त करके, गलत वर्तन को ज्ञान के द्वारा स्टॉप कर सकते हैं। जो ज्ञानीपुरुष तो तीन लोकों के नाथ कहे जाते हैं, वहाँ पर क्या नहीं हो सकता? उसके लिए ज्ञानी से सब कुछ समझ लें। अब, इस समझ के पुरुषार्थ से सभी महात्मा अनुभव की क्षपक श्रेणियों तक पहुँचने का शुभारंभ करें, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

ज्ञान की माता ‘समझ’

जब बात को समझेंगे तब मेल बैठेगा

प्रश्नकर्ता : हमें इतने साल हो गए ज्ञान लिए फिर भी अभी तक प्रकृति अपनी भूमिका निभाए बगैर क्यों नहीं रहती?

दादाश्री : यह प्रकृति तो भूमिका निभाएगी ही न! क्या यह नहीं समझना चाहिए कि प्रकृति क्या है? प्रकृति अर्थात् अन्टाइमली बम। कब फूट जाए, वह कहा नहीं जा सकता! फूटेगी तो अवश्य। वह अपने खुद के काबू में नहीं है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, अभी भी संयम क्यों नहीं आता?

दादाश्री : लेकिन आपके काबू में नहीं है। फिर भी ऐसा बोलने की ज़रूरत नहीं है। उसे कंट्रोल करने जाओगे तो मूर्ख बनोगे। उसे कंट्रोल नहीं करोगे तो और ज़्यादा मूर्ख बनोगे। अर्थात् बात को समझने की ज़रूरत है हमें। समझेंगे तभी बात बनेगी। समझना अर्थात् क्या कि प्रकृति को जो होता रहता है, उसे देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : हमें अगर कोई कुछ अपमानजनक बात कह दे तब इतने सालों बाद भी, हमें संयम नहीं रहता तो इसका अर्थ ही क्या है?

दादाश्री : उसमें तो अंदर प्रकृति जोर से आवाज़ भी कर सकती है। दस सालों से वह धीरे से बोल रही थी और उस दिन तो आवाज़ तेज़ हो जाती है क्योंकि अंदर बारूद ज़्यादा भर

गया है इसलिए हमें कोई झंझट नहीं करनी है। उसे हम जुदा ‘देख’ सकते हैं या नहीं, इतना ही समझ लेने की ज़रूरत रहती है। प्रकृति को जुदा देखें तो परेशानी नहीं है। देखा अर्थात् आप मुक्त।

हमें कोई डॉट, उस समय क्या हम अलग नहीं रहते होंगे? मान दे उस घड़ी भी अलग रहते हैं और डॉट उस घड़ी भी अलग रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : हम अलग नहीं रह सकते हैं उस घड़ी। हमें कोई डॉटें तो सामने जवाब दे देते हैं।

दादाश्री : लेकिन वहाँ पर भी आपको यह ‘देखना’ है और उसके बाद आपका ध्यान ऐसा होता जाएगा, धीरे-धीरे। इस मार्ग पर हमारे साथ भी ऐसा ही होता था लेकिन अब यह होने लगा है। अब आपके साथ भी ऐसा हो रहा है, तो उसमें से अब धीरे-धीरे यह भी होगा। यानी कि मार्ग पर आ रहे हो।

मैंने आपको जो ज्ञान दिया है न, वह आपको दृष्टि दी है कि यह जो रिलेटिव दृष्टि है, वह सारी दृष्टि उल्टी है। उससे अगले जन्म बंधते रहेंगे और अपना कल्याण नहीं हो पाएगा। अब दृष्टि आत्म सम्मुख हो गई है। अब वह उल्टी दृष्टि निकाल दी है। उल्टी दृष्टि निकलने से दर्शनमोह निकल गया। मोह के दो भाग, मोह के दो बच्चे हैं; एक है उल्टी दृष्टि और दूसरा है वर्तन (बरताव, आचरण)। अब आपका सिर्फ

वर्तन ही बचा है, उल्टी दृष्टि तो चली गई। अब नया वर्तन उत्पन्न नहीं होगा। वह जो पुराना वर्तन है, वह चारित्रमोह है।

नहीं निकालनी है भूल वर्तन की

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद अभी भी ऐसा लगता है कि यह सब हमारे वर्तन में तो आ ही नहीं रहा, क्रोध हो जाता है। हमें जिस आदर्श रूप से रहना चाहिए उस तरह से नहीं रह पाते तो क्या अभी भी चारित्रमोह नहीं गया?

दादाश्री : यदि वर्तन की भूल नहीं निकालेंगे तो चारित्रमोह चला जाएगा और यदि वर्तन की भूल निकाले तो चारित्रमोह नहीं जाएगा। वर्तन की बिल्कुल भी भूल नहीं निकालनी है। कैसा वर्तन हो रहा है, उसे देखते रहना है। वर्तन की भूल निकालना अर्थात् खुद जैसा था, वैसा ही देहाध्यास हो गया। खुद वापस उसी रूप हो गया! भाई, जब अज्ञानी था तब वर्तन की भूल निकालता था। अब ज्ञान के बाद भी वर्तन की भूल निकालता है? वर्तन चाहे जैसा भी हो, उस वर्तन की बिल्कुल भी भूल नहीं निकालनी है। अब, उसे देखते ही रहना है। आप ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में आ गए, पहले कर्ता स्वभाव में थे। अभी भी वह पुरानी आदत नहीं जाती।

वर्तन में लाने के पीछे पड़ा है संसार

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप्तवाणी बहुत पढ़ता हूँ लेकिन जब वह समझ, वर्तन में नहीं आती न, तब फिर सफोकेशन हो जाता है।

दादाश्री : देखो, फिर से वर्तन में लाने की मेहनत करने लगे! वर्तन में नहीं लाना है। वर्तन तो, जो भीतर है वही माल बाहर निकलेगा, आपको सिर्फ देखते रहना है। देखते रहना है कि कैसा वर्तन हो रहा है। वर्तन में लाने के लिए तो यह सारा संसार बैठा ही है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : वर्तन में आता नहीं और उनके दिन फिरते नहीं! आपके वर्तन में क्या है? ये चंदूभाई टेढ़े ही लगते हैं। वे टेढ़े दिखें तो भले ही दिखें। फिर अगर कहे कि 'नहीं। अच्छे हैं, अच्छे हैं...'

प्रश्नकर्ता : तो अच्छे लगने लगेंगे।

दादाश्री : हाँ, यदि एकदम अच्छे बना दोगे तो फिर देखने को रहा ही क्या? अतः जो टेढ़े होंगे तो सिनेमा देखने में मजा आएगा। है न? कितना अच्छा मार्ग है, है न! तप नहीं, त्याग नहीं, कुछ भी नहीं, उपवास नहीं और सिर्फ अपने यहाँ पर ही कहा है न कि 'नींद में सुख नहीं है।' और कोई तो यह जानता ही नहीं है न! अरे.. आराम से सोते हैं, जोर-जोर से खरटे लेकर।

आज का वर्तन, पिछले जन्म के फल स्वरूप है

मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार, यह जो अंतःकरण है न, आज यह पिछले जन्म की पूरी लाइफ का फल दे रहा है। पिछले जन्म में आप जो थे, वही आज फल दे रहा है और इस जन्म का ज्ञान आपमें 'डिफर' (अलग) हो रहा है! पिछले जन्म में अलग श्रद्धा बैठी थी। जैसी श्रद्धा बैठी थी वैसा ज्ञान हुआ था और इस जन्म में पिछले जन्म की श्रद्धा और ज्ञान के अनुसार वर्तन हो रहा है। आज हमें नया ज्ञान मिला है इसलिए उन दोनों के बीच में झगड़ा चलता रहता है।

कितने लोग हमसे पूछते हैं 'कहीं चोरी भी करनी चाहिए? लेकिन मुझे चोरी के ही विचार आते हैं।' घनचक्कर, तू उस स्टेशन पर था। जो ज्ञान व दर्शन भरे हुए हैं, अभी वही माल निकल रहा है।

श्रद्धा + ज्ञान = वर्तन

वर्तन, बिलीफ (मान्यता) और ज्ञान एक

दूसरे पर आधारित (डिपेन्डेन्ट) हैं। जैसी बिलीफ होती है, वैसा ही ज्ञान मिलता है और वर्तन भी वैसा ही हो जाता है। वर्तन करना नहीं पड़ता।

‘ज्ञान ही आत्मा है।’ जैसा-जैसा जिसका ज्ञान होता है, उसका आत्मा वैसा ही हो जाता है। विपरीत ज्ञान हो तो आत्मा विपरीत आत्मा हो जाता है। जिसे जिस ज्ञान पर श्रद्धा हो, वह वैसा ही बन जाता है। श्रद्धा आ जाए तो श्रद्धा को मदद करने वाला ज्ञान मिल जाता है और ज्ञान तथा श्रद्धा एक समान हों तो चारित्र्य भी वैसा ही हो जाता है। आत्मा वैसा ही हो जाता है। कोई सास चाहे अपनी बहू को पागल कहे लेकिन जब तक बहू को इसमें श्रद्धा नहीं बैठती, तब तक उस पर कोई इफेक्ट (असर) नहीं होता। चाहे पूरी दुनिया ही उसे पागल क्यों न कहे, तब भी उस पर साइकोलॉजिकल इफेक्ट नहीं होता लेकिन यदि उसकी श्रद्धा बदल जाए तो वह सचमुच पागल हो जाएगी! इसलिए इस दुनिया में कभी किसी का प्रभाव मत पड़ने देना अपने पर!

तूने जैसी-जैसी प्रतिष्ठा की, तेरा प्रतिष्ठित आत्मा वैसा ही बन गया है।

श्रद्धा की प्रतीति पर आधारित है ज्ञान

प्रश्नकर्ता : श्रद्धा और ज्ञान में क्या अंतर है ?

दादाश्री : ‘श्रद्धा’ अनडिसाइडेड ज्ञान है। ‘ज्ञान’ वह डिसाइडेड ज्ञान है यानी कि ‘अनुभव वाला ज्ञान’ है। बगीचे में बैठे हों और कुछ आवाज़ हो और मैं कहूँ कि कुछ है, आप भी कहते हो कि कुछ है तो वह कौन सा ज्ञान है? उसे कहते हैं ‘श्रद्धा’ अथवा ‘दर्शन’। फिर सब उठकर पता लगाने गए। हाथ फेरकर सभी ने तय किया कि यह तो गाय है। इसे ‘ज्ञान’ कहते हैं। बिलीफ में यानी कि दर्शन में कभी रोंग (गलत) भी हो सकता है। सामान्य रूप से जानना वह

‘दर्शन’ कहलाता है और विशेष रूप से जानना, वह ‘ज्ञान’ कहलाता है।

‘ज्ञान’ किसे कहते हैं? वह जो श्रद्धा की प्रतीति पर आधारित हो। श्रद्धा तो ‘ज्ञान’ की पहली सीढ़ी है। यदि श्रद्धा नहीं है तो ‘ज्ञान’ नहीं है।

पहले प्रतीति बैठती है, फिर उस अनुसार ज्ञान होता है और उसके अनुसार वर्तन होता है। पहले मिथ्यात्व प्रतीति थी, तो मिथ्यात्वज्ञान उत्पन्न हुआ और मिथ्यात्व वर्तन उत्पन्न हुआ। ज्ञान होता है, तब वर्तन अपने आप ही आता जाता है, कुछ करना नहीं पड़ता। मिथ्यात्वश्रद्धा और मिथ्यात्वज्ञान इकट्ठे हों, तब अपने आप वैसा वर्तन हो ही जाता है करना नहीं पड़ता फिर भी वह ऐसा कहता है कि ‘करना है’ वह उसका अहंकार है। उसने ऐसा मान लिया था कि, मिस्त्री के काम में ही मज़ा आएगा और मिस्त्री के काम में ही सुख है तो वह ‘मिस्त्री’ बन जाता है। प्रतीति बैठे, तब मिस्त्री के काम का उसे ज्ञान उत्पन्न होता है, ज्ञान और श्रद्धा दोनों एक हो जाएँ, तब आचरण में तुरंत आ ही जाता है। ऐसे हाथ रखा और ईंट चिपके, हाथ रखा और ईंट चिपके! हर एक ईंट को ऐसे देखना नहीं पड़ता।

वर्तन से परवश हो आप

वर्तन और ज्ञान का कोई लेना-देना नहीं है। ज्ञान, ज्ञान के स्वभाव में है और वर्तन, पुद्गल का है! वर्तन या तो शुभ होता है या अशुभ, शुद्ध नहीं होता। वर्तन के मामले में आप परवश हो। वर्तन आपके हाथ में नहीं है, वह डिस्चार्ज रूपी है। डिस्चार्ज अपने आप होता है। यदि आपको नहीं करना हो तो भी हो जाता है। उसमें आपको घबराना नहीं है कि यह मुझे छूएगा। आपको कैसे छूएगा वह? आपने तो यहाँ से खाना डाला। फिर मल(संडास) आपको कैसे छू सकेगा? मल, मल की जगह पर चला जाएगा।

हमारी यह अक्रम की खोज सब से उच्च है जहाँ पर भावकर्म रहता ही नहीं।

यह विज्ञान तो फैलाने योग्य है। यह विज्ञान अच्छा है। इसमें आपकी क्रियाओं से कुछ भी लेना-देना नहीं है। प्रकृति जबरन करती रहती है, आपकी इच्छा के विरुद्ध करती रहती है।

एक बार एक मदर(माँ) कहने लगीं, 'दादाजी, आपने यह ज्ञान मुझे और मेरे बेटे को दिया है। अब, मुझे उस बेटे पर राग क्यों होता है? मैंने कहा, 'यह कहीं राग है? ज्ञान देने के बाद कहीं राग होता होगा? राग-द्वेष तो अज्ञान के कारण हैं। तब वे मुझसे पूछने कहने लगीं, 'तो यह क्या है?' मैंने कहा, यदि 'आलपिन और चुंबक को देखो तब पता चलेगा कि चुंबक के साथ-साथ आलपिन क्यों इधर-उधर होती है? क्या कारण है? चुंबक में इलेक्ट्रिकल बॉडी होने की वजह से यह सब होता है और लोगों को भ्रांति हो जाती है कि मुझे हो गया।' सच्ची श्रद्धा तो जागृति सहित होनी चाहिए। 'मैं चंदूभाई हूँ' मानकर चलते हैं, वही अजागृति है।

स्वरूप की मात्र श्रद्धा ही बैठे तो जगत् में किसी भी जगह पर डर लगेगा ही नहीं, भय चला जाएगा।

श्रद्धा - अनुभव - वर्तन

एक व्यक्ति जानता है कि अब्रह्मचर्य करना गलत है। उसकी श्रद्धा निरंतर ब्रह्मचर्य पालन करने में ही है। उसके बाद अनुभव में भी ऐसा आता है लेकिन वर्तन में शायद न भी हो।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् श्रद्धा ही अनुभव तक पहुँचती है ?

दादाश्री : श्रद्धा आने के बाद जिस पर श्रद्धा है, उस चीज़ का धीरे-धीरे अनुभव होता जाएगा। जब संपूर्ण रूप से अनुभव हो जाएगा

तब वर्तन में आएगा। वह शायद वर्तन में न भी आए लेकिन इसे लेकर हमें उसका वर्तन नहीं देखना है, यही देखना है कि उसकी श्रद्धा क्या है? क्योंकि तीनों एट ए टाइम नहीं हो सकते।

प्रश्नकर्ता : एक-एक, स्टेप बाय स्टेप है।

दादाश्री : हाँ, इसीलिए हम यह जोखिम लेते हैं न! क्योंकि हम जानते हैं कि हम श्रद्धा बदल देंगे तो उसके बाद कोई दिक्कत नहीं आएगी। फिर भले ही लोग शिकायत करें (कि दिक्कत आती है)। हम यह श्रद्धा बदल देते हैं। हम भ्रांति निकालकर दूर हो जाते हैं जबकि लोग तो वर्तन को बदलने जाते हैं। वह उसका तरीका नहीं है। वर्तन कब बदलेगा? बिलीफ बदले हुए कितने ही जन्म बीत जाने के बाद जब ज्ञान बदलता है तब वर्तन बदलता है। इसलिए हम यह जोखिम लेते हैं न!

सिर्फ इतना ही देखना है कि उसकी श्रद्धा बदली है या नहीं। ऐसा यह विज्ञान बाहर कोई नहीं बताएगा। बाहर तो वर्तन देखेंगे।

प्रतीति का फल अनुभव

आप सिर्फ जानने वाले हो। व्यर्थ में हाय-हाय करनी और यदि हाय-हाय होती है तब भी वह चंदूभाई को होती है, आपको क्या? और जैसे-जैसे यह ज्ञान परिणामित होता जाएगा वैसे-वैसे वह भी चला जाएगा। चंदूभाई खुद भी ज्ञानी बन जाएँगे। परिणामित होना चाहिए। जबकि लोग कहते हैं कि भीतर तो उस पर अमल नहीं होता। अरे, उस पर अमल नहीं करना है। यह ज्ञान अमल करने को नहीं है क्योंकि आपको सिर्फ इसकी प्रतीति करने की ही ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : उसके बाद प्रतीति ही काम करती है।

दादाश्री : ऐसी प्रतीति बैठ गई कि यह

टेम्पेरी है। उस प्रतीति का फल क्या आएगा? रोज़-रोज़ यह अनुभव बढ़ता जाएगा कि यह टेम्पेरी है, विनाशी ही है और उसके बाद उसके वर्तन में आएगा कि यह विनाशी है इसलिए फिर उसका असर नहीं होगा।

आप आत्मपक्ष के हो लेकिन संसारपक्ष नहीं छूट पाता। श्रद्धा बैठ गई है कि यह गलत है लेकिन इसे वर्तन में आने में टाइम लगेगा। तब तक बुद्धि काम करती रहेगी। उसका खुद को पता भी चलता है कि यह दखल कर रही है क्योंकि श्रद्धा बैठ गई है। खुद जानता है कि यह गलत है, छूटना है फिर भी छुटकारा नहीं हो पाता न!

प्रश्नकर्ता : तो फिर वह वर्तन में कब आएगा ?

दादाश्री : पहले श्रद्धा में आता है फिर वह समझ में आता है। श्रद्धा उत्पन्न हो गई, 'दादा ने जो कहा वह मुझे समझ में आ गया। आत्मा, आत्मा बन गया और दूसरा, दूसरा बन गया। दोनों अलग हो गए।' वह समझ में आ जाता है उसके बाद वह धीरे-धीरे ज्ञान में आता है, उसके बाद अनुभव में आता है और अनुभव में आने के बाद वर्तन में आ जाता है।

प्रतीति काँज़ है और वर्तन परिणाम

काँज़ पहले बदल जाते हैं और परिणाम बाद में बदलता है। उसे ऐसी प्रतीति बैठ जाती है कि, 'ये सब गहने वगैरह अब किसी काम के नहीं हैं। इस संसार के पैसे वगैरह किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है' लेकिन गिनते समय तो सतर्क ही रहता है क्योंकि गिनते समय वे पिछले परिणाम हैं जबकि यह प्रतीति तो काँज़ है। इसलिए हम परिणाम को नहीं देखते हैं, हम तो यह देखते हैं कि प्रतीति क्या बैठी है। उसके बाद हट जाते हैं। हम जानते हैं कि यह काँज़ हुआ था इसलिए वैसे परिणाम आएँगे इसलिए फिर हम डाँटते नहीं हैं

जबकि लोग तो किच-किच करते हैं कि 'दादा का ज्ञान लिया फिर भी वैसी ही रही।' भाई, ये तो उसके पिछले परिणाम हैं लेकिन ऐसा समझ में नहीं आने की वजह से वह भी चिढ़ जाती है। फिर कहती है, 'छोड़ो न, इसके बजाए तो पहले जैसे थे वैसे ही अच्छे थे।' अतः फिर प्रतीति में आया हुआ भी चला जाता है।

अर्थात् ये जो गलत दिखाई देता है, वे पिछले परिणाम हैं। सारा वर्तन परिणाम हैं और अंदर जो प्रतीति है, वह पुरुषार्थ है। उस पुरुषार्थ का फल आएगा। अभी तो यह पिछले पुरुषार्थ का फल आया है। अभी भी यदि व्यापार में नुकसान हो जाता है तो व्याकुलता हो जाती है। उसका क्या कारण है? व्याकुलता होना तो पिछला परिणाम है, वह आज का परिणाम नहीं है।

अपने महात्माओं को ज्ञान है, सब कुछ है लेकिन प्रतीति में है और प्रतीति को ही हम सर्वस्व कहते हैं, भले ही तेरे वर्तन में नहीं हो, वर्तन की मुझे ज़रूरत नहीं है। यदि तेरी प्रतीति में है तो वही सर्वस्व हो जाएगा क्योंकि प्रतीति वाला सर्वस्व बनेगा जबकि सर्वस्व वाला, सर्वस्व बन जाए या न भी बने।

आज किसी का वर्तन बहुत अच्छा है लेकिन भीतर उसकी प्रतीति किस पर बैठी है कि अमरीका जाकर अच्छा बिज़नेस करना है। यह देखना चाहिए कि प्रतीति कहाँ है अन्य भाग नहीं देखना है।

अब किसी महात्मा की पत्नी ने दोनों की कपड़ों की पेट्टी एक साथ रखी हो और पत्नी ने अपने कुछ कपड़े पति के बैग में रख दिए। जब पति वह देखता है तो शोर मचा देता है कि 'मेरी पेट्टी को तूने छुआ ही क्यों?' लो, उसे यह ज्ञान है, प्रतीति है, फिर भी वर्तन ऐसा? तो, वह वर्तन तो ऐसा ही होगा न! अभी वर्तन नहीं बदला है।

वर्तन बदलने में तो समय लगेगा। 'मेरी पेटी को छुआ ही क्यों? ये मेरा तेरा करते हैं या नहीं? 'तेरी पेटी' यहाँ से ले जा, छोड़ो न अब! अब, यह जो माल भरा है वह पिछली प्रतीति का है। आज जो प्रतीति है, अब उसका माल भरेगा तब देखना। यानी कि हम उसकी प्रतीति और उसके ज्ञान को बदलते हैं। यदि उसे प्रतीति बैठ गई तो उसके लिए सत्युग आ जाएगा। प्रतीति बैठने के बाद तो बहुत झंझट नहीं रहती।

जब समता रहेगी तब प्रकट होगा अनुभव ज्ञान

एक व्यक्ति हमसे पूछ रहा था, "दादा, मुझे पूरे दिन, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान रहता है लेकिन मैं अभी भी उस रूप नहीं बन पाता।"

अरे, उस रूप क्यों बनना चाहता है? अभी तो तुझे प्रतीति बैठी है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। प्रतीति बैठने से क्या होता है, अंदर वे जो बीज थे, वे सब जल गए। अब, वे दोबारा उगने लायक नहीं रहे लेकिन अब, जो पिछले बीज हैं, उनका निबेड़ा (हल) तो लाना पड़ेगा न? वे पिछले बीज फल देकर जाते हैं, उतना अनुभव ज्ञान प्रकट होता है। फिर वह प्रतीति से भी आगे बढ़ता है। अनुभव ज्ञान कब प्रकट होता है? जब कड़वे-मीठे फल आएँ और उनमें समता रहे तो वह अनुभव ज्ञान है। जैसे-जैसे अनुभव ज्ञान होगा, वैसे-वैसे ज्ञान प्रकट होता जाएगा, वीतरागता रहेगी। अनुभव ज्ञान प्रकट होने के बाद जब वर्तन में आएगा, तब तू संपूर्ण रूप से शुद्धात्मा बन जाएगा। जब भरा हुआ माल निकल जाएगा तब ज्ञान वर्तन में आएगा। क्या यों ही आ जाता है?

प्रश्नकर्ता : कई बार पाँच आज्ञा फॉलो (पालन) करना भी भूल जाते हैं।

दादाश्री : नहीं, समझ लेनी है और कुछ भी नहीं करना है। आचरण में नहीं लाना है। आचरण में तो अपने आप आ ही जाएगा। ये

आज्ञाएँ समझ लीं कि व्हाट इज रियल एन्ड व्हाट इज रिलेटिव, यदि यह समझ में आ जाए तो फिर वास्तव में दृष्टि ही बदल जाएगी। पहले थोड़ा हैन्डल घुमाना पड़ता है एकाध महीने तक, पुरानी आदतें जो पड़ी हुई हैं न, उन्हें हटाने के लिए! बाकी फिर सब सहज हो जाएगा।

समझकर स्थिर होकर स्वरूप में समाता जाता है

क्रमिक मार्ग में कितना प्रयत्न करते हैं, तब जाकर आत्मा का लक्ष (जागृति) बैठता है! वैसा लक्ष तो बैठता ही नहीं है। उसे खुद को लक्ष में रखना पड़ता है। जैसे कि व्यापार में होता है न, व्यापार की बातें लक्ष में रखनी पड़ती हैं न, उसी प्रकार से आत्मा को लक्ष में रखना पड़ता है कि आत्मा ऐसा है। जब उसे प्रतीति बैठेगी तभी इस तरह लक्ष में रह पाएगा। उसे गुणों पर प्रतीति बैठती है। जबकि, अपना तो यह आत्मानुभव कहलाता है क्योंकि सहजता को ही अनुभव कहते हैं, जो कि अपने आप ही प्राप्त होता है। जिसके लिए प्रयत्न करना पड़े, उसे अनुभव नहीं कहेंगे। क्रमिक में उन्हें प्रतीति वगैरह करनी पड़ती है। प्रतीति के लिए प्रयत्न करना पड़ता है।

आपका जो आत्मानुभव है, वह अंश अनुभव है और अक्रम द्वारा वह आपको सहज रूप से प्राप्त हो चुका है न, इसलिए आपको उससे लाभ होता है लेकिन अभी भी जैसे-जैसे प्रगति करते जाओगे वैसे-वैसे अनुभव बढ़ता जाएगा। उसके बाद पूरी बात समझनी पड़ेगी। ज्ञान के परिचय में रहकर यह सब समझ लेना है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान को स्थिर करने के लिए कौन से साधन अपनाने पड़ते हैं?

दादाश्री : साधन नहीं अपनाने हैं, ज्ञान को स्थिर करने के लिए सिर्फ समझने की ही ज़रूरत है। अगर करना पड़े तो स्थिर नहीं होगा। जहाँ

करना पड़े, वहाँ सहजता चली जाएगी, स्थिर नहीं हो पाएगा। समझने से स्थिर हो पाएगा।

प्रश्नकर्ता : जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, क्या जैसे-जैसे यह ज्ञान भी दृढ़ होता जाएगा ?

दादाश्री : जैसे-जैसे समझ में आता जाता है जैसे-जैसे स्वरूप में समाता जाता है। आपको तो सिर्फ समझना ही है। मैंने जो ज्ञान दिया है, उससे सभी आवरण टूट गए, कर्तापना छूट गया, सभी कारण खत्म हो गए। अब परिणाम बाकी बचे हैं। परिणामों को किस तरह से भोगना है? उसके लिए यह समझ लो! समझने से हल आ जाएगा और स्वरूप में इतना समा जाएगा 'जैसे कि' अकेला ही हो। सामने वाला गाली देता रहे और यह सिर्फ 'जानता' रहे, इतना ही। नहीं रहता ऐसा ?

जितना (ज्ञान) समझेगा उतना स्वरूप में समाता जाएगा। जितना स्वरूप में समाता जाएगा, उतनी ही मुक्ति। यहीं पर मुक्ति का अनुभव होगा। समा जाना यानी मोक्ष में, खुद के 'स्वरूप' में समा जाना।

समझ अर्थात् दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा, समझ किसे कहेंगे ?

दादाश्री : समझ मतलब दर्शन। जिस ज्ञान को जानता है लेकिन वर्तन में न आए, उसे समझ कहते हैं और जो ज्ञान वर्तन में आए, वह ज्ञान कहलाता है।

समझ के ज्ञान में परिणामित होने पर वह समझ वर्तन में आती है। देख सके यानी समझ में आया और जान सके यानी ज्ञान में आया। देखने और जानने में बड़ा अंतर है। समझ हमेशा 'समाती' (स्वरूप में स्थिर) है। स्वरूप में समा जाने का अंतिम अंश ही मोक्ष है। बुद्धि से उछलता है और समझ से स्वरूप में समाता है। सही समझ कभी भी मिट नहीं सकती।

उल्टी समझ दुःख है और सही समझ सुख है। देखना है कि कौन-सी समझ मिलती है। उल्टी समझ की आँटी पड़ जाए तो दुःख, दुःख और दुःख! अगर आँटी छूट जाए तो सुख, सुख और सुख! अन्य कोई सुख-दुःख है ही नहीं इस दुनिया में! विनाशी चीजों में 'खुद' का सुख मानना और खुद का अविनाशी सुख नहीं समझना वह 'रोंग बिलीफ', वह मिथ्यादर्शन है और 'राइट बिलीफ' यानी 'सम्यक्दर्शन'! खुद 'अपने', सेल्फ को समझ जाए तो खुद ही परमात्मा है!

आवरण टूटने पर बिलीफ में आ जाता है

प्रश्नकर्ता : आप जो समझाते हैं, उस समझ में और खुद के स्वरूप की समझ में क्या कनेक्शन है ?

दादाश्री : खुद के स्वरूप की समझ तो आ गई लेकिन क्या उसकी रक्षा के लिए अन्य बातें नहीं समझनी चाहिए? उसे भी ज्ञान कहते हैं। आपको ऐसी बात समझा दी है कि 'इस संसार का जो सत्य है, वह रिलेटीव सत्य है' तो यह जो समझ दी है, वह भी ज्ञान है।

मैं जो कहता हूँ वह दिखाई देता है, उस पर आपको विश्वास हो जाता है। आपका आवरण टूटने से आप समझ गए, हमारे शब्द बोलने से, कि 'भाई, यह सब जो है वह स्पेस की वजह से है, इन मनुष्यों के चेहरे वगैरह सभी।' अब, यदि किसी अन्य का वह आवरण नहीं टूटा हो तो उसे पता नहीं चलेगा।

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी से आवरण टूट गए तो उससे क्या असर हुआ ?

दादाश्री : आवरण टूटने से बिलीफ में आ गया लेकिन ज्ञान में नहीं आया। खुद को ज्ञान में कब आएगा? जब जैसे रूप का अनुभव होगा, तब वह ज्ञान में आएगा। जब इस वाणी

द्वारा आवरण टूटने पर बिलीफ उत्पन्न होती है, तब यह स्वीकार हो जाता है, प्रतीति हो जाती है कि यह सही है। आवरण टूटना और प्रतीति होना, दोनों एक साथ होता है।

समझ को जो ग्रहण करे, वह प्रज्ञाशक्ति

प्रश्नकर्ता : आप जो समझाते हैं, वह किसे पहुँचता है? देह या आत्मा को?

दादाश्री : आत्मा को ही न! पर वह कौन सा आत्मा? जो शुद्धात्मा है, वह नहीं, प्रज्ञा नामक जो शक्ति है, उसके साथ सत्संग चलता रहता है। देह को भी नहीं, देह और आत्मा दोनों के बीच की जो शक्ति है, उसे पहुँचता है। प्रज्ञाशक्ति ही समझती है यह। यहाँ जो समझाते हैं, उसे जो कैच -अप ग्रहण करती है, वह प्रज्ञाशक्ति है।

प्रज्ञाशक्ति कब तक रहती है? हमें यह ज्ञान मिला उससे आत्मा बन गए लेकिन अभी तक आत्मा श्रद्धा में, प्रतीति में, दर्शन में है लेकिन ज्ञान में नहीं आया है। जब तक यह चारित्र में नहीं आ जाता तब तक प्रज्ञाशक्ति काम करती रहती है।

प्रज्ञा क्या है? आत्मा से जो पराया है, उसे कभी भी अपना नहीं बनने देती और जो खुद का है, उसे पराया नहीं मानने देती, वह प्रज्ञा! प्रज्ञा तो आत्मा का ही अंग है और वह निरंतर आत्मा को मुक्ति दिलाने का कार्य करती है। जैसे-जैसे प्रज्ञा खिलती जाती है, वैसे-वैसे वर्तन में बदलाव आता जाता है। जब वर्तन बदलता है, तब भार कम लगता है। 'स्वयं का' और 'पराया', इस प्रकार होम डिपार्टमेंट और फॉरेन डिपार्टमेंट दोनों को अलग ही रखती है, वह प्रज्ञा है, वही आत्मा है, वही चारित्र है। वर्तन ही चारित्र। वर्तन अर्थात् वह कि 'स्व' और 'पर' को एकाकार नहीं होने दे। सत्संग से प्रज्ञाशक्ति खिलती जाती है।

समझ धीरे-धीरे ज्ञान के रूप में परिणामित होती है

प्रश्नकर्ता : समझना चाहिए या वर्तन में लाना चाहिए?

दादाश्री : वर्तन में लाना ही नहीं है, वर्तन में आना चाहिए। समझने का फल क्या है? वह यह कि, 'वर्तन में आ ही जाता है!' समझने के बावजूद भी जब तक वर्तन में नहीं आ जाए तब तक उसे 'दर्शन' कहा जाता है, और वर्तन में आए उसे 'ज्ञान' कहा है।

प्रश्नकर्ता : समझ, ज्ञान और वर्तन समझ चुके हैं लेकिन फिर वर्तन में नहीं आता।

दादाश्री : हाँ, ज्ञान के बिना वह वर्तन में नहीं आता। 'समझ' अर्थात् 'अनडिसाइडेड' बात।

आप पर मेरी बात ज़बरदस्ती नहीं थोपनी है। आपको खुद को ही समझ में आना चाहिए। मेरी समझ मेरे पास है। जोर ज़बरदस्ती से तो कोई काम नहीं होता। आपको वह समझ में आ जाए फिर आप उस 'समझ' से चलोगे। ज्ञान में कुछ भी 'करने' की ज़रूरत नहीं है। समझने की ज़रूरत है। ज्ञान और 'समझ' में कुछ फर्क होता होगा क्या? आप मुझसे यह बात समझ लो, वह 'समझ' धीरे-धीरे ज्ञान के रूप में परिणामित होगी। ज्ञान जानते ज़रूर हैं लेकिन वर्तन में नहीं आता, उसे 'समझ' कहते हैं।

शास्त्रों में जानने गया, वह ज्ञान क्रियाकारी नहीं है और यह समझ क्रियाकारी है। आपको कुछ भी नहीं करना पड़ता। अंदर से 'ज्ञान' ही करता रहता है। क्रियाकारी ज्ञान, वह चेतनवंत 'ज्ञान' है, वही विज्ञान है, वही परमात्मज्ञान कहलाता है। शुष्कज्ञान को बाँझ ज्ञान कहा जाता है। पपीता नहीं लगता और मेहनत उतनी ही! पूरा मनुष्यत्व बेकार चला जाता है इसलिए कुछ समझना तो

पड़ेगा ही न? यहाँ पर सिर्फ 'समझना' ही है, 'करना' कुछ भी नहीं है। जहाँ 'करना' है, वहाँ मोक्ष का मार्ग नहीं है। जहाँ 'समझना' है, वही मोक्ष का मार्ग है।

ज्ञान अर्थात् प्रकाश, समझ नहीं

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञान अर्थात् प्रकाश, समझ नहीं' है, यह समझाइए।

दादाश्री : ज्ञान से हम किसी को प्रकाश देते हैं तो उसे समझ में आता है कि यह बात इस तरह से करनी है। ज्ञान का प्रकाश नहीं हो तो समझ में ही नहीं आएगा न! समझ अलग चीज़ है और ज्ञान अलग चीज़ है। हम जब ज्ञान बताते हैं तब उसकी समझ में आता है कि 'स्टेशन इस तरफ है वगैरह, वगैरह। इस रास्ते से इस रास्ते पर, इस रास्ते पर', ऐसा उसकी समझ में आ जाता है। कहेगा, 'हाँ, ठीक है। हाँ, मुझे पता चल गया'। अतः समझ अलग चीज़ है। ज्ञान, वह प्रकाश है और समझ यानी उस प्रकाश से हमें फल प्राप्त होता है और फिर फल से कार्य होता है।

यहाँ से स्टेशन जाने का 'ज्ञान' वह आपको समझ देता है। ज्ञान पहले बताता है, पूरा नक्शा बनाकर दे देता है, तब फिर आपकी समझ में आता है फिर आप कहते हो कि, 'मुझे समझ में आ गया'। जब कोई ज्ञान बताता है तब आप क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : समझ में आ गया।

दादाश्री : 'मुझे समझ में आ गया!' यह समझना अलग चीज़ है और ज्ञान अलग चीज़ है। जो समझ में आता है, वह फिर वर्तन में आता है। अगर समझ में नहीं हो तो, ज्ञान चाहे कितना भी प्रकाश बताएँ फिर भी आचरण में नहीं आएगा।

समझ अंत में ज्ञान के रूप में परिणामित होती है

ज्ञान की माता कौन है? 'समझ' है। माता के बिना पुत्र उत्पन्न नहीं होता न? या कोई पुत्र ऊपर से टपका है? अर्थात् माता तो चाहिए न? ज्ञान की माता 'समझ' है। वह 'समझ' कहाँ से प्राप्त होगी? वह 'ज्ञानी' से समझो। शास्त्रों से समझो तो शास्त्रों से पूरी समझ नहीं मिलती, लेकिन थोड़ी ही समझ मिलती है।

हम यह 'ज्ञान' देते हैं, वह 'केवलदर्शन' है इसलिए उसमें सारी ही 'समझ' आ गई। अब 'समझ' में से वर्तन उत्पन्न होता है लेकिन अगर 'समझ' ही नहीं हो तो? वर्तन कभी भी नहीं आएगा।

समझ किसे कहते हैं कि ठोकर न लगे। पूरा दिन ठोकर खाता रहता है और मैं समझता हूँ, जानता हूँ, करता है। तो भाई, समझ किसे कहता है? समझ और 'ज्ञान' में फर्क क्या है? जो समझ वर्तन में नहीं आए, तब तक उस ज्ञान को 'समझ' कहा जाता है। वह समझ धीरे-धीरे 'ऑटोमैटिकली' ज्ञान के रूप में परिणामित होती है। वर्तन में आए तब जानना कि यह ज्ञान है, यानी कि तब तक समझते रहो।

जो 'समझ' ज्ञान में परिणामित हो जाएगी, उस दिन वह चीज़ (दोष) आपके पास नहीं होगी। आपको कुछ भी नहीं करना है। ग्रहण-त्याग के हम अधिकारी ही नहीं क्योंकि यह मोक्षमार्ग है। ग्रहण-त्याग के अधिकारी, शुभाशुभ मार्ग में होते हैं, भ्रांति मार्ग में होते हैं, यह तो 'क्लयर' मोक्ष मार्ग है।

जब वही 'समझ' ज्ञान के रूप में परिणामित होगी, तब वर्तन में आएगी। दादा ने जो समझ दी है, वह समझ ही अनुभव करवाती रहेगी। ऐसे करते-करते, अनुभवज्ञान होते-होते ज्ञान के रूप में वह परिणामित होगी, उस दिन वह 'चीज़' (दोष) नहीं रहेगी।

पूर्ण समझ और पूर्ण अनुभव ही ज्ञान

प्रश्नकर्ता : हाँ।

जब समझ और अनुभव दोनों मिल जाएँ तब ज्योति हो जाती है। हमारी समझ और अनुभव में रहता है इसलिए भीतर ज्योति रहती है और फिर वह ज्योति छलकती है। जो पास में बैठा हो वह भी सुखी हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने कहा कि समझ और अनुभव, वे ज्योति हैं। इसका मतलब क्या यह है कि 'यह आम मीठा है', वह समझ है और उसे खाने पर वह मीठा लगता है और उसका अनुभव होता है तो वह ज्योति है?

दादाश्री : अनुभव अर्थात् वह आम ऐसा था, वैसा अनुभव रहना चाहिए। थ्योरिटिकल बात को अनुभव नहीं कहते, वह तो समझ कहलाती है और जब वह प्रैक्टिकल हो जाए तो वह अनुभव है।

प्रश्नकर्ता : आपने अभी ऐसा कहा कि 'समझ में आता है' और अनुभव में 'रहता है', इस एक ही बात से पूरा समझ में आ जाता है। उसमें सब कुछ आ जाता है।

दादाश्री : जब पूर्ण समझ और अनुभव हो तब उसे ज्योति कहते हैं। वह ज्योति ही ज्ञान है, वही परमात्मा है।

प्रतीति के बाद प्रवर्तन की तरफ जाता है

प्रश्नकर्ता : दादा आप यह जो बता रहे हैं न, वह इतना सरल नहीं लगता। सच कह रहा हूँ। आप कहते हैं कि 'यह हो गया', वह कबूल है। जब मैं यहाँ पर दो घंटे तक बैठता हूँ तब ऐसा लगता है कि मैं अनासक्त हो गया हूँ। लेकिन जैसे ही बाहर निकला और चप्पल नहीं मिलीं तो देखो मेरी आसक्ति!

दादाश्री : हाँ, ठीक है। जब चप्पल नहीं मिलती तब है! लेकिन वह बात आपको समझ में तो आती है न?

दादाश्री : अब, यहाँ पर ज्ञान प्राप्त होने के बाद क्या हुआ वह बताऊँ आपको? भले ही वह मन में मान बैठा कि मेरा सब कुछ हो गया है लेकिन क्या हुआ है, आपको वह बताता हूँ। 'मैं अनासक्त हूँ', इस बात की प्रतीति हुई है, वह वर्तन में नहीं आया है। अब, प्रतीति होने के बाद धीरे-धीरे उस तरफ, उस प्रवर्तन की तरफ ही जा रहे हैं। क्या अभी मान बैठने से कुछ बदल जाएगा? नहीं, इसलिए ये जो चप्पलें नहीं मिलतीं और उसमें आपको आसक्ति दिखाई देती है तब ऐसा कहना 'यह मेरा स्वरूप नहीं है, मैं अनासक्त हूँ।'

समझने से आएका वर्तन में

कोई हमसे कहे कि 'मैं रास्ता समझ गया हूँ' और उसके बाद उल्टे रास्ते पर चला जाए, तब क्या हम नहीं समझ जाएँगे कि यह समझ ही नहीं था! अगर समझा होता तो उसी अनुसार जाता फिर नहीं भटकता। इस तरह से समझ लो कि रास्ते में आप भटक न जाओ और यदि भटक गए इसका मतलब यह कि समझे ही नहीं थे। और फिर क्या कहता है कि 'मैं तो समझ गया था।' अगर समझ में आ जाए तो परिणाम उसी अनुसार आना ही चाहिए न! अमल में आना ही चाहिए न! आपको तो सब कुछ समझ में आता है! यदि समझ में नहीं आए तो फिर वर्तन में न भी आए। सभी महात्माओं को जैसे-जैसे समझ में आता जाता है, वैसे-वैसे उनके वर्तन में भी देखता हूँ। मुझे पता चल जाता है कि इन्हें समझ में आ गया और वर्तन में आ गया।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह हुआ कि जब कषाय चले जाएँ, यानी कि जब किसी भी प्रकार के कषाय न हों, तब यही कहेंगे न कि समझ में आ गया?

दादाश्री : तब तो बहुत अच्छी तरह से समझ में आ गया। तब तो बहुत उच्च प्रकार की समझ आ गई। उसकी तो बात ही अलग है!

समझ को ज्ञान में परिणामित होने के लिए चाहिए समय सीमा

प्रश्नकर्ता : वीतराग विज्ञानी से वीतराग विज्ञान प्राप्त करने के बाद, पूरी तरह से समझने के बाद, समझ को ज्ञान में परिणामित होने के लिए कोई समय सीमा है क्या?

दादाश्री : समय की सीमा तो है न! अपने पास जो ज्ञान है, उसे प्रगमित होने में हमेशा टाइम लगता है। जैसे कि इस दूध में ज़रा सा दही डालने के बाद तुरंत ही दही माँगो तो नहीं मिलेगा, उसके लिए छः या आठ घंटे चाहिए। नहीं चाहिए? वैसे ही समझ, कुछ टाइम बाद, ज्ञान में परिणामित होती है।

प्रश्नकर्ता : सभी को अलग-अलग तरह से होता है?

दादाश्री : हाँ, हर एक को अलग-अलग तरह से, जिसके जैसे आवरण। किसी को दो घंटों में भी हो जाता है और किसी को दो साल में भी नहीं होता है। आवरण पर आधारित है। मोह पर आधारित है।

जिसकी समझ जितनी पक्की, उतना उसका ज्ञान में 'डेवलपमेन्ट' होता जाएगा। वैसा कब होगा उसकी चिन्ता नहीं करनी है। वह तो अपने आप ही ज्ञान में परिणामित होगा, अज्ञान अपने आप ही छूट जाएगा। इसलिए यहाँ पर समझ-समझ करते रहना है। 'ज्ञान' ही काम कर रहा है। आपको कुछ भी नहीं करना है। नींद में भी 'ज्ञान' काम कर रहा है, जागते समय भी 'ज्ञान' काम कर रहा है और स्वप्न में भी 'ज्ञान' काम कर रहा है।

प्रश्नकर्ता : जो समझ में आया, उसके वर्तन

में आने में जो टाइम लगता है, उसमें जो कुछ भी क्रिया होती है, वह चार्ज है या डिस्चार्ज?

दादाश्री : नहीं, चार्ज नहीं है। जब तक वह डिस्चार्ज नहीं हो जाता, तब तक का टाइम लगता है। क्योंकि यदि पतला होगा तो एक जन्म में ही चला जाएगा। और यदि बहुत मोटा होगा तो देर लगेगी लेकिन अनुभव में आ जाना चाहिए।

संसार में एक अणु के बराबर भी सुख महसूस नहीं होना चाहिए, तब कहा जाएगा कि वह अनुभव में, वर्तन में आ गया। अभी तो यदि रात को अच्छी नींद आ जाए तो कहेगा, 'हाश! अच्छी नींद आई।' तब भी यह सुख किसमें महसूस हुआ? तब कहता है, 'नींद में।' वह आत्मा का सुख नहीं है। अब, संसार का वह सारा सुख तो प्रतीति होने से गायब हो गया। यह ज्ञान मिलने के बाद, आत्मा प्राप्त होने के बाद सब गायब ही होने लगता है। यह कैसा व्यापार? गायब ही होने लगा। वर्ना, लाखों जन्मों में भी नहीं जाता।

अनुभव होने पर बदलती है सुख की श्रद्धा

वह समझ में आया। समझ का अर्थ है कि यह प्रतीति बैठ गई कि सोने(सुवर्ण) में सुख नहीं है, लेकिन उसके बाद वर्तन में तो अभी भी सुख महसूस होता है। हमें यह तो समझ में आ गया कि सोने में सुख नहीं है इसलिए क्योंकि आत्मा अलग हो गया है लेकिन उसके बाद ज्ञान में नहीं आया है। ज्ञान अर्थात् अनुभव में नहीं आया है। वह तो जब सोना पहना हुआ हो और कोई मारपीट करके ले जाए, तब ऐसा लगता है कि 'भाई, सोने का मोह ही गलत है।' उसने मार खिलाई, उसके बाद ज्ञान में आया। यह अनुभव हुआ इसलिए फिर वर्तन में आ जाता है। बाद में वह सोना नहीं पहनता। अब सोने पर से श्रद्धा उठ गई है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बहुत उठ गई।

दादाश्री : सोने पर से श्रद्धा उठ गई लेकिन

अभी भी वर्तन में बाकी है, उसका क्या कारण है? जितना माल भरा हुआ है, उतने समय तक वर्तन में रहेगा, उसके बाद तो इसे पहनने का मन भी नहीं होगा। इसी तरह से सभी तरह की श्रद्धा उठती जाएगी। सोने में जो सुख माना था, लक्ष्मी में सुख माना था, वह सब जो सुख माना था, उस सुख पर से श्रद्धा उठती जाएगी और आत्मलक्ष्मी श्रद्धा आती जाएगी। अब सोने पर बहुत भाव तो नहीं आता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : फिर शॉपिंग का?

प्रश्नकर्ता : शॉपिंग तो बंद। जो चीजें ज़रूरी हैं वे लेनी पड़ती हैं लेकिन जैसा पहले था कि, 'मैं यह लूँ, वह लूँ' वह सब चला गया।

दादाश्री : धीरे-धीरे सब चला जाएगा और मन में शांति रहेगी। पहले तो शॉपिंग करने पर भी अपार दुःख था, डॉलर खर्च करके भी भीतर से आकुल-व्याकुल रहते थे जबकि अब तो खर्च नहीं हैं और शांति है

समझ, वर्तन में आनी चाहिए

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि समझ जाए तो वर्तन में आएगा ही न?

दादाश्री : समझ उसे कहा जाता है कि जो वर्तन में आ जाए लेकिन अभी भी समझ वर्तन में नहीं आती। समझ में आने के बावजूद भी यदि वर्तन में नहीं आए तो तब तक भगवान ने उसे 'दर्शन' कहा है और जो वर्तन में आ जाए, उसे भगवान ने 'ज्ञान' कहा है। उसी समझ को 'ज्ञान' कहा है। कैसा है? वर्तन में आना ही चाहिए। देर-सवेर, लेकिन वर्तन में आए बगैर नहीं रहेगा। यदि वर्तन में आए तो उसे ज्ञान कहा है और आपके समझ में ऐसा हो कि यह करने जैसा नहीं है उसके बावजूद भी यदि वर्तन में नहीं आता तो वह दर्शन है।

जो वर्तन में हो वह निरंतर ध्यान में रहता है

प्रश्नकर्ता : दादा, वर्तन में आए तब वह कैसा होता है?

दादाश्री : वह अलग तरह का होता है।

प्रश्नकर्ता : अब आज हमने सुना, श्रद्धा बैठी, अंदर फिट हो गया और ऐसा लगा कि हंड्रेड परसेन्ट यही बात करेक्ट है।

दादाश्री : ऐसा लगता ज़रूर है लेकिन वह वर्तन में नहीं आता। अतः वह निरंतर ध्यान में नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : हाँ, निरंतर ध्यान में नहीं रहता।

दादाश्री : वह निरंतर वर्तन में रहेगा तो निरंतर ध्यान में रहेगा। जैसा वर्तन में होता है वैसा ध्यान में रहता है। अतः यह वर्तन में नहीं रहता न! धीरे-धीरे, बूँद-बूँद करके बढ़ता जाता है लेकिन रास्ता जानेगा, तभी बूँद-बूँद करके बढ़ेगा। सभी उसी रास्ते पर जा रहे हैं लेकिन अंत में वे मार खाते हैं। साफ करने जाते हैं, शुद्ध करने जाते हैं लेकिन आज जो कुछ भी करने जाते हैं, एक बार उसी रूप हो जाते हैं। इसे समझ रहे हो क्या?

प्रकृति में दखल, वही परधर्म

प्रश्नकर्ता : मोक्ष का अनुभव होता है, लेकिन प्रकृति अपना स्वभाव नहीं छोड़ती। उससे ऊब जाते हैं।

दादाश्री : प्रकृति अपना स्वभाव छोड़ेगी ही नहीं न! घर के सामने सरकार चारों तरफ गटर खोल दे तो गटर अपना गुण बताएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बताएगा।

दादाश्री : उस घड़ी आपको कौन सी दृष्टि में रहना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : ज्ञाता-दृष्टा।

दादाश्री : एशो-आराम करने जाएँगे तो हमें गंध आएगी इसलिए ज्ञाता-दृष्टा ही रहना। प्रकृति में गटर-वटर आएँ, तब उसमें जागृत रहना।

प्रश्नकर्ता : 'हम' 'पड़ोसी' को 'देखते' रहें और उसे सही रास्ते पर मोड़ने का प्रयत्न नहीं करें तो वह कैसे चलेगा? वह दंभ नहीं कहलाएगा?

दादाश्री : हमें मोड़ने का क्या अधिकार है? दखल नहीं करना है। उसे कौन चलाता है, वह जानते हो? हम चलाते भी नहीं हैं और हम मोड़ते भी नहीं हैं। वह 'व्यवस्थित' के ताबे में है तो फिर दखल करने से क्या मतलब है? जो हमारा 'धर्म' नहीं है, उसमें दखल करने जाएँ तो परधर्म उत्पन्न होगा!

बाहर बिगड़ा हुआ, अंदर सुधर रहा है

प्रश्नकर्ता : यह तो जब प्रकृति एकदम से कुछ उल्टा-सीधा कर डालती है न, तब भीतर ज़बरदस्त सफोकेशन (घुटन) होता है।

दादाश्री : अरे, यहाँ तक होता है कि पाँच-पाँच दिन तक नहीं खाते। अरे, गुनाह किसका और किसे मारता रहता है! पेट को किसलिए मारता है? गुनाह मन का है और पेट को मारता है, कहता है कि, 'तुम्हें खाना नहीं खाना है', तब उसमें देह बेचारा क्या करे? फिर शक्ति चली जाए न, बेचारे की। अगर उसने खाया हो तो दूसरा कुछ काम कर पाएगा इसलिए लोग कहते हैं न कि 'भैंसे के गुनाह का दंड भिश्ती को क्यों देते हो?' गुनाह भैंसे का (मन का) है और इस भिश्ती का (देह का) बेचारे का क्या गुनाह है?

और बाहर झाड़-बुहार करने से क्या फायदा है? जो हमारी सत्ता में ही नहीं है! बिना वजह शोर मचाने का क्या अर्थ है? लेकिन अंदर का सारा कचरा बुहारना पड़ता है, अंदर का सारा धोना पड़ता है। यह तो बाहर का धो डालते हैं, गंगाजी

जाएँ तो भी देह को बार-बार डुबकियाँ लगवाता है। अरे, देह को डुबकियाँ लगवाने से क्या सिद्ध होगा? मन की डुबकी लगाओ न! मन को, बुद्धि को, चित्त को, अहंकार को, ये सभी को, पूरे अंतःकरण को डुबोना है। इसमें साबुन भी कभी इस्तेमाल नहीं किया, फिर बिगड़ जाएगा या नहीं?

जब तक कम उम्र है तब तक अच्छा रहता है। उसके बाद दिनोंदिन बिगड़ता है और फिर कचरा जमा होता जाता है। इसलिए हमने क्या कहा कि तेरे आचार बाहर रखता जा और ये नौ कलमें लेता जा। जो कुछ भी झूठ है, उसे बाहर रखता जा और इन नौ कलमों की भावना करता जा तो अगला जन्म हो जाएगा उत्तम!

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि चाय पीते जाएँ लेकिन अंदर चलते रहना चाहिए कि नहीं पीएँ, नहीं पिलाएँ और पीने के प्रति अनुमोदन न करें...'

दादाश्री : हाँ, इसका अर्थ इतना ही है कि, 'हम इसमें सहमत नहीं हैं'। ऐसा कहना चाहते हैं। यानी उससे अलग हैं और चाय पीना जब अपने आप छूट जाए, तब ठीक है। लेकिन अब हम उससे चिपके हुए नहीं हैं, वह हम से चिपकी हुई है। उसकी अवधि पूरी हो जाने पर छूट जाएगी, ऐसा कहना चाहते हैं। एक ओर चाय पीते रहो और दूसरी ओर यह भावना बोलो तो चाय पीना छूट जाएगा और इस भाव की शुरुआत हो जाएगी।

जबकि लोग कहते हैं कि 'आइए साहब, आइए साहब' लेकिन वहाँ पर मन में क्या होता है कि 'इस वक्त कहाँ से आ टपके (गए)?' जबकि ये क्या कहते हैं, चाय पीते हैं लेकिन अंदर कहते जाते हैं कि 'यह नहीं होना चाहिए'। जबकि वे लोग इससे उल्टा कहते हैं। बाहर 'आइए, पधारिए' कहते हैं और फिर अंदर कहते हैं कि, 'ये कहाँ से आ टपके?' तो वे सुधरा हुआ बिगाड़ते हैं, जबकि हम बिगड़ा हुआ सुधारते हैं।

प्रश्नकर्ता : पूरे 'अक्रम विज्ञान' में यही चीज़ अद्भुत है कि बाहर बिगड़ा हुआ है और अंदर सुधार रहे हैं।

दादाश्री : हाँ, इसलिए हमें संतोष रहता है न कि भले ही यह घान (कढ़ाई में एक बार में तली गई चीज़) बिगड़ गया तो बिगड़ गया लेकिन यह नया घान तो अवश्य अच्छा होगा। एक घान बिगड़ा सो गया लेकिन नया तो अच्छा बनेगा न? जबकि संसार में लोग क्या कहते हैं कि 'यह जो घान है उसी को सुधारना है।' अरे, अब छोड़ भी, जाने दे न वर्ना नया भी बिगड़ जाएगा। उससे तो घान भी बिगड़ जाएगा और तेल भी।

प्रश्नकर्ता : अभी जो बिगड़ा हुआ है, आज हम उसके ज़िम्मेदार नहीं हैं। वह तो पिछले जन्म का परिणाम है।

दादाश्री : हाँ, आज हम ज़िम्मेदार नहीं हैं। आज वह सत्ता औरों के हाथ में है। हमारे हाथ में नहीं है न! इसमें परिवर्तन नहीं हो सकता फिर बिना वजह हाय-हाय क्यों कर रहा है?

समझ में छुपी है अहिंसक कला

प्रश्नकर्ता : ज्ञान के इतने साल हो चुके हैं तो अपने में प्रकृति के सामने इतना संयम आ ही जाना चाहिए न?

दादाश्री : वह ठीक है लेकिन यदि दादा नहीं मिले होते तो क्या दशा होती?

प्रश्नकर्ता : ओहोहो! उसकी तो फिर बात ही करने जैसी नहीं है!

दादाश्री : तो फिर, ऐसी बात करते हो! कितने महल तोड़ दे ऐसी शक्ति! हाँ! फिर इसमें जहाँ विरोधाभास लगे, वहाँ पर आप संभालकर काम लो। प्रकृति तो मशीन है और मशीनरी के साथ ऐसे आड़ाई (अहंकार का टेढ़ापन) कैसे की जा सकती है? मशीन से अगर ऐसा कहें, उस

गियर से कि 'देख मैं ऊँगली लगा रहा हूँ, मैंने तुझे बनाया है। तू मेरी ऊँगली के बीच में मत आना' लेकिन वह तो काट ही डालेगी। फिर चाहे वह हमने बनाई हो या किसी और ने क्योंकि मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट है। यह प्रकृति मिकेनिकल है अतः हमें दादा से ऐसा सीख लेना है, तो वह मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट ढीला पड़ जाएगा। हो सकता है या नहीं हो सकता ऐसा? हम से एक बार कला सीख जाओ। यह बोधकला अर्थात् अहिंसक कला है, हिंसक कला नहीं है। हाँ, मोक्ष में ले जाए ऐसी है। अतः अब यह जन्म बिगाड़ना मत!

हम बिलीफ को ही देखते हैं

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद ये सब जो महात्मा है, उनकी चित्तवृत्ति धीरे-धीरे एक ही जगह पर आ जाएगी न?

दादाश्री : यदि करना आए तो एक हो जाएगी। अब कमज़ोर नहीं पड़ेगा न! यदि हमारे विज्ञान में रहेगा तो एकाग्र हो ही जाएगी, एक ही जन्म में। ऐसा है न, भले ही वर्तन में नहीं हो लेकिन बिलीफ में तो है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, बिलीफ है।

दादाश्री : तब फिर जो बिलीफ में है वह सत्य है, भले ही वर्तन में न हो। वर्तन अपने हाथ की या काबू की बात नहीं है लेकिन बिलीफ में तो है न?

प्रश्नकर्ता : बिलीफ में पूरी तरह से है।

दादाश्री : वर्ना, यदि वर्तन की नेसेसिटी (ज़रूरत) होती और वर्तन में नहीं आता तो हमें सभी को डाँटना पड़ता। हम वर्तन को देखते ही नहीं हैं, बिलीफ को ही देखते हैं कि आपकी बिलीफ कहाँ है? हमारा वर्तन और बिलीफ, दोनों एक ही प्रकार के होते हैं। आपका वर्तन अलग प्रकार का होता है और बिलीफ अलग प्रकार की।

सभी जगह क्या कहते हैं? वर्तन सुधारो। मुझे दिखा कि एक भी वर्तन किसी ने सुधारा? जिस में संडास जाने की शक्ति नहीं है वह कैसे वर्तन सुधारेगा? बड़े आए वर्तन सुधारने वाले! वे सभी धर्म वाले वर्तन सुधारने का कहते हैं लेकिन भाई! क्या आचार-विचार और उच्चार कभी सुधरते होंगे? कैसे सुधरते हैं, उसकी खोज कर। यह तो हमारा वैज्ञानिक तरीका है वर्ना इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति नहीं सुधरा। यह तो, जहाँ पर कुदरत की मार पड़ती है वहाँ पर वह जाता है, बस। उसमें उसका खुद का कोई पुरुषार्थ नहीं है और यह तो जब से विज्ञान आया है तभी से लोग बदले हैं। यह विज्ञान आचार-विचार व उच्चार माँगता ही नहीं न! जबकि संसार तो यही माँग रहा था। कहते हैं, 'यह व्यक्ति उल्टा बोलता है, उसे आप धर्मिष्ठ कैसे कहोगे?' 'अरे, उल्टा बोलता है, उससे हमें क्या लेना-देना?' उसकी 'बिलीफ' क्या है, वह देख न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है। बिलीफ ही देखनी चाहिए।

दादाश्री : चाहे अभी देशी कपास है लेकिन उसके नए बीज कौन से डल रहे हैं, वह देखो न! हम बीज तो बहुत महँगे लाए हैं, उसकी तैयारियाँ करने लगे हैं, खाद ले आए हैं तो क्या उस पर से हम समझ नहीं जाएँगे कि अगला साल बहुत अच्छा रहेगा!

जब तक सम्यक् नहीं करवाई थी तब तक आपकी पहले वाली 'बिलीफ' रोंग थी। उससे यह फल आया है। वह तो आपको भुगतना ही पड़ेगा लेकिन अभी आपकी 'बिलीफ' अलग जगह पर है, ऐश्वर्य में रहने की ही 'बिलीफ' है और यों वर्तन में ऐश्वर्य नहीं रहता, वृत्तियाँ नहीं रहतीं। उसमें कोई हर्ज नहीं है लेकिन देखते रहना है कि 'बिलीफ' कहाँ है। बस, रात-दिन

यही देखते रहना है कि 'बिलीफ' किस में है और 'बिलीफ' के ही पक्ष में रहना है और उसी 'बिलीफ' को विटामिन देते रहना है। इस तरह वर्तन देखकर घबराने का कोई कारण नहीं है। वर्तन को देखकर घबराना तो किसे कहेंगे कि जैसे छोटे बच्चों की बाल मति होती है न, छोटे बच्चे नासमझ होते हैं तब उन्हें डाँटते रहते हैं। क्या आपको कभी डाँटा है? नहीं डाँटते। बच्चों को तो डाँटते रहना पड़ता है।

प्रतीति में कभी भी दाग मत लगाना

ये लोग कहते हैं कि अब हमने हमारे दोष हैं, वे जान लिए पर अब निकाल दीजिए। आप हमें मारिए-करिए, जो करना हो वह कीजिए, पर दोष निकाल दीजिए। अब इसके लिए क्या रास्ता है?

दोष किस तरह पैठा, वह आप खोज निकालो उसके बाद पता चलेगा, दोष कैसे निकलेंगे? पैठा उस घड़ी उसे डालना नहीं पड़ता है इसलिए, निकालते समय निकालना नहीं पड़ता। जो चीज़ डाली हो वह निकालनी पड़ती है। ये तो मुझे कहते हैं, 'दोष निकाल दीजिए!' अरे, लेकिन वे किससे पैठ गए? तब कहे, 'एक इंसान ऐसे कुसंग में गया, उससे उसे विश्वास हो गया कि ये मजे कर रहे हैं और यह रास्ता बहुत अच्छा है। बहुत अच्छा सुखदाई है।' उसे उस ज्ञान पर श्रद्धा बैठ गई, प्रतीति बैठ गई।

उसी तरह मैं इन्हें क्या करता हूँ? जो उनकी भूलें हैं, वे नकारते हैं कि 'हममें बिल्कुल ही भूल नहीं हैं वैसी, लोगों में भूलें हैं।' वे उनकी भूलें उन्हें दिखाता हूँ। फिर उन्हें प्रतीति बैठती है हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत), कि ये सब भूलें ही हैं। वह हम एक्सेप्ट (स्वीकार) करते हैं। 'यह भूल अब आप निकाल दीजिए', कहते हैं। मैंने कहा, 'अब निकालना नहीं होता। प्रतीति बैठ गई, उसका मतलब यह कि भूल निकलनी शुरू हो

गई। तुझे सिर्फ मन खुला रखना है कि भाई, आप चले जाओ। बस, इतना ही बोलने की जरूरत है।' प्रतीति बैठने से ही भूल चली जाती है और प्रतीति बैठने से भूल पैठ जाती है। डालना-निकालना नहीं होता वह तो। यह क्या कोई कारखाना है? यानी एक भूल निकालनी हो तो कितना समय लगता है? कितने ही जन्म निकल जाते हैं। समझ में आए ऐसी बात है न यह सब?

प्रतीति, उसमें दाग नहीं पड़ना चाहिए।

'चंदू' खेद में और 'आप' ज्ञान में

अभी तक तो ऐसा कहते थे कि 'मुझे हुआ', लेकिन अब ज्ञान के बाद उसका साथ मत दो कि 'मुझे हुआ!' अरे, आपको कैसे होगा? आपको तो दादा ने अलग कर दिया! अलग नहीं कर दिया?

प्रश्नकर्ता : अलग ही हैं।

दादाश्री : हाँ, तब तो अलग ही रखना चाहिए न! पूरा संसार 'मुझे हुआ' कहकर साइकोलॉजिकल (मानसिक) रोग से पीड़ित है। कहता है, 'मेरे ही समधी ने मुझे गालियाँ दी।'

यदि कोई भूल करे और खेद नहीं होता तो, वह भी गलत है। खेद तो होना ही चाहिए। उसे हमें जानते रहना है कि चंदूभाई बहुत खेद में है। तब हमें चंदूभाई का कंधा थपथपा देना है। यदि इसका अवलंबन लेकर खेद करना बंद कर देंगे तो फिर वह कच्चा रह जाएगा। खेद तो होना ही चाहिए। जिसने उल्टा किया है, उसे उसका खेद तो होना ही चाहिए इसलिए जब खेद हो तब आपको कहना चाहिए कि, 'अब भूल के लिए प्रतिक्रमण करो, प्रत्याख्यान लो। हम हैं न आपके साथ। चलो शक्ति माँगो।' यह तो अक्रम विज्ञान है।

भीतर देखते रहने से ही शुद्धिकरण

अपने यहाँ महात्माओं का, पहले मन शुद्ध होता है, उसके बाद वाणी शुद्ध होती है। जब वाणी

शुद्ध होती है फिर वर्तन शुद्ध होता है। लेकिन पहले मन शुद्ध होना चाहिए। जितने अंश तक मन शुद्ध होगा उतने अंश तक वाणी शुद्ध होती है। जितने अंश तक वाणी शुद्ध हुई उतने अंश तक वर्तन शुद्ध होगा। सब से अंत में वर्तन शुद्ध होता है। वर्तन की बहुत कीमत नहीं है। भगवान ने वर्तन को बहुत कीमती नहीं माना है। संसार ने वर्तन को कीमती माना है। वर्तन तो घी के तपने के बाद, गरम होने के बाद आता है! जो ठंडा घी होता है वह बहता नहीं है इसलिए ऐसा नहीं कह सकते कि वर्तन में कुछ नहीं आया। उसे गरम करने पर वापस वैसा ही हो जाएगा। अक्रम विज्ञानी का कहना यही है कि सारा संसार जो मानता है, उससे यह अलग ही करता है। सारा संसार इसे ही, वर्तन को ही मानता है। 'तेरे मन में चाहे कुछ भी हो लेकिन तेरा वर्तन तो अच्छा है न', तो अक्रम ज्ञानी उसके लिए मना करते हैं कि, भाई, इसमें तो जोखिम है। तेरा वर्तन चाहे कितना भी अच्छा हो लेकिन तेरा मन बिगड़ा हुआ है तो वह अगले जन्म का हिसाब है। इस वर्तन के फल स्वरूप तुम्हें इसी जन्म में यश मिल जाएगा लेकिन अगला जन्म तो बिगड़ा न? संसार को अगले जन्म की नहीं पड़ी है। अभी अच्छा-अच्छा दिखाई देता है क्योंकि उसके पास सम्यक्दृष्टि नहीं है, उसके पास मिथ्यादृष्टि है।

महात्मा का वर्तन देखने जाओगे तो कोई फायदा नहीं होगा। वर्तन तो कितने ही काल के बाद हाथ में आता है और यह काल ऐसा नहीं है। यह स्लिपिंग काल है, फिसलन वाला काल है। इसमें कुछ नहीं बदलेगा। इसके बजाय तो छोड़ो इसे। वर्तन को छोड़कर, मनोशुद्धि होने दो। आत्मा शुद्ध हो गया। मन की शुद्धि होती ही रहेगी निरंतर। आत्मा शुद्ध हो गया इसलिए अब जितना मन के डिस्चार्ज को देखते रहेंगे, उतना ही मन शुद्ध होता जाएगा।

परम विनय से खुलते हैं समझ के द्वार

प्रश्नकर्ता : महात्माओं को यह ज्ञान दिया है तो अब, उनके आचरण में इस ज्ञान का कितना प्राकट्य होना चाहिए?

दादाश्री : व्यवहार में प्रकट होने में समय लगेगा! क्योंकि आपका जो व्यवहार है न, वह नहीं बदलेगा, इसलिए समय लगेगा। हमारे सभी व्यवहार खत्म हो गए हैं इसलिए हमें कोई हर्ज नहीं है। आप मेरे जैसे ही ज्ञानी हो लेकिन आपका व्यवहार ठीक नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो आप भी ज्ञानी हैं और ये भी ज्ञानी हैं तो दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : ('मैं शुद्धात्मा हूँ' वह ज्ञान दोनों का समान है इसलिए) ज्ञान में फर्क नहीं है लेकिन आचरण में फर्क है!

प्रश्नकर्ता : तो उस चीज़ को आचरण में लाना बहुत कठिन काम है, क्या?

दादाश्री : आचरण में लाना ही नहीं है। अक्रम का मतलब आचरण नहीं है। वह अनुभव तो अपने आप आता ही जाएगा क्योंकि यह जो डिस्चार्ज है न, उसका *निकाल* (निपटारा) ही करना है। और कुछ नहीं करना है।

हम क्या कहते हैं कि उनके व्यवहार को मत देखना। उनका पज़ल सॉल्व हो चुका है। जो मन के विचार, वाणी के उच्चार और देह के आचार हैं, वे सब तो डिस्चार्ज चीज़ हैं। डिस्चार्ज चीज़ को कोई व्यक्ति बदल नहीं सकता और चार्ज चीज़ अलग है। चार्ज को बदला जा सकता है। आचार-विचार-उच्चार को नहीं बदल सकते हैं क्योंकि वे डिस्चार्ज हैं। लोग तो डिस्चार्ज को ही देखते रहते हैं।

आचरण वह है जो कि यथार्थ रूप से समझ में आ जाए। आचरण में दुर्गंध किस से फैलती

है? 'इगोइज़म' और अन्य दुर्गुणों से। अहंकार विलय होने पर ही 'परम विनय' उत्पन्न होता है। लाखों जन्म तक क्रिया करेगा फिर भी कोई परिणाम नहीं आएगा। 'परम विनय'! से मोक्ष है। 'परम विनय' से 'समझ' के द्वार खुल जाते हैं।

नहीं कर सकते दोष का रक्षण

प्रश्नकर्ता : आप सिम्पटम्स (लक्षण) नहीं देखते हैं और मूल कॉज़ (कारण) का इलाज करते हैं। ऐसे डॉक्टर कहाँ मिलेंगे!

दादाश्री : ऐसे डॉक्टर नहीं हैं, उसी का तो यह झमेला है न? न तो ऐसे डॉक्टर मिले और ना ही ऐसी दवाई मिली इसलिए फिर यह चला तूफान! अतः फिर परिणाम को मारने लगे, इफेक्ट को!

'नसवार सूंघनी चाहिए' ऐसी श्रद्धा बैठी, अर्थात् संपूर्ण रूप से प्रतीति बैठी इसलिए फिर वह नसवार पैठा और अब वह उस प्रतीति से छूटेगी कि 'नसवार गलत है'। संपूर्ण रूप से ऐसी प्रतीति हो जानी चाहिए कि यह दोष ही है तो निकल जाएगा। यही नियम है। यदि उसका रक्षण नहीं करे, प्रोटेक्शन (रक्षण) नहीं करे तो फिर वह चला जाएगा लेकिन वापस प्रोटेक्शन ही करता है। हम पूछें कि 'साहब, अभी भी नसवार सूंघते हो?' तब कहता है, 'उसमें हर्ज नहीं है।' इसे प्रोटेक्शन करना कहते हैं। वह जानता है कि यह गलत है। प्रतीति बैठी है लेकिन वापस प्रोटेक्शन करता है। प्रोटेक्शन नहीं करना चाहिए। करते हैं क्या प्रोटेक्शन?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, प्रोटेक्शन करते ही हैं न!

दादाश्री : आबरू तो चली गई है। है ही कहाँ आबरू? आबरू वाला क्या कपड़े पहनकर घूमता होगा? जबकि ये तो ढाँकते रहते हैं, आबरू! ढाँक-ढाँककर आबरू बचाते रहते हैं। जब फटे तब सिल देते हैं! अरे कोई देख लेगा, सिल दो।

नहीं बोलना चाहिए कि 'अब हर्ज नहीं है'

बहुत से लोगों का व्यवहार तो अच्छा होता है लेकिन अंदर बहुत ही खराब रहता है जबकि अपने महात्माओं का भले ही व्यवहार खराब हो लेकिन फिर भी वे आंतरिक रूप से कितने सयाने होते हैं!

प्रश्नकर्ता : यह तो सैद्धांतिक बात है लेकिन कई बार हम से क्या हो जाता है कि यह दादा का वचन है न, तो एकांतिक रूप से सिर्फ इस वचन को पकड़ लेते हैं कि हमारे आचार वगैरह का कुछ नहीं है, अब तो सारा अंदर वाला ही देखो।

दादाश्री : उसे पकड़ लेते हैं, बस। उसे पकड़ने की ज़रूरत नहीं है। आपको समझने की ज़रूरत है कि कभी ऐसा हो जाए तो भय नहीं लगना चाहिए लेकिन अगर पकड़ लोगे तो आपका कच्चा रह जाएगा।

प्रश्नकर्ता : पकड़ लेते हैं और फिर उसके बचाव में पड़ जाते हैं।

दादाश्री : नहीं, बचाव में नहीं पड़ना है। ऐसा है न, जैसे कि आपका दृढ़ निश्चय हो कि कुएँ में नहीं गिरना है! तो यदि यहाँ पर सौ-दो सौ कुएँ हों और उसी रास्ते से आपको आना-जाना पड़े तो अंधेरे में भी आप उसमें गिर नहीं जाते हैं क्योंकि आपका निश्चय है कि चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन मुझे कुएँ में नहीं गिरना है तो नहीं गिरोगे। यदि आप कुएँ में गिरना चाहो तो गिर जाओगे। आपका निश्चय तो होना चाहिए न! यह मैं किसलिए कहता हूँ? आपको बाँधने के लिए नहीं, आपको भय रहित बनाने के लिए कहता हूँ। आपके ये बाह्याचार ऐसे हैं, टेढ़े हैं, उससे परेशान मत होना। आपको इसका यह अर्थ निकालने की ज़रूरत नहीं है। आपको तो ऐसा ही रखना है कि 'ऐसा होना ही नहीं चाहिए', बस।

उसके बाद भी यदि हो जाए तो उसे 'लेट गो' करते हैं। हमने क्या कहा? व्यवस्थित किसे कहते हैं कि 'भाई, आँख खुली रखकर गाड़ी चलाना और वह भी सावधानीपूर्वक। इसके बावजूद भी अगर टकरा जाए तो व्यवस्थित। फिर यदि आपका गुनाह हो जाए तो कोई हर्ज नहीं है, वह व्यवस्थित है लेकिन यह सावधानीपूर्वक होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो आप निर्भय बनाने के लिए ऐसा कहते हैं लेकिन उसके साथ अभी यह मेरी वर्तन की भूल है, उसे देखकर क्या मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि 'मैंने यह कैसा माल भरा है?'

दादाश्री : वह तो आना ही चाहिए कि 'भाई, मैंने ऐसा माल भरा!' वैसा तो सभी को होता है। सभी परेशान हो जाते हैं किसी को यह अच्छा नहीं लगता लेकिन क्या हो सकता है? दूसरा कोई उपाय ही नहीं है न!

अतः आपको सिर्फ इतना ही नहीं कहना चाहिए कि 'अब मुझे कोई हर्ज नहीं है।' इतना कहना चाहते हैं कि आपको इस तरह गैरज़िम्मेदाराना नहीं बोलना चाहिए। बाकी, हमने जो ज्ञान दिया है न, वह तो यही समझकर दिया है कि आपको कुछ नहीं होगा, यदि आप गैरज़िम्मेदाराना नहीं बोलोगे तो!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, आपका यह ज्ञान मिला, सब हुआ। अब अगर मैं ऐसा कहूँ कि 'अब, मुझे वकालत करने में कोई हर्ज नहीं है', तो फिर?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं कहना है। आप वकालत करो, जब तक करनी हो तब तक लेकिन यदि ऐसा कहा कि 'इसमें हर्ज नहीं है', तो वह उस नियम को तोड़ता है। जोखिम मोल मत लो। वह तो, जोखिम मोल लेना तो दो पटरियों के

बीच से फिश प्लेट निकाल लेने के समान है। उससे गाड़ी डिरेल (पटरी से उतर) हो जाएगी इसलिए ऐसा नहीं कहना है। ऐसा क्यों कहना है? हमने तो इसीलिए कहा हैं न कि 'गैरज़िम्मेदाराना नहीं बोलना है कि मुझे तो कुछ भी बाधक नहीं है।' अब ऐसा नहीं कहना क्योंकि लोग तो दूसरों को दिखाने के लिए पावर में ऐसा कहते हैं कि, 'अब, हमारे सिर पर दादा हैं, हमें तो कुछ नहीं होगा।' तो वह पावर आपके लिए बाधक बन जाएगा। नहीं कहना चाहिए ऐसा।

दोनों तरफ के अभिप्राय हुए तो बिगड़ेगा

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारी प्रगति के मार्ग में कौन-कौन से भयस्थान हैं? वह भी आप से जानना है क्योंकि बाद में हम आपका कोई वाक्य यों ही उठा लें, उसके बजाय यदि यहाँ पर पूछ लें तो क्या हर्ज है?

दादाश्री : यों ही वाक्य को उठा लेने से तो बहुत मुश्किल हो जाएगी। यदि मुझसे पूछ लोगे तो कोई दिक्कत नहीं आएगी और अब, 'मुझे कुछ नहीं छुएगा,' ऐसा कहना ही जोखिम है। हमने कहा है न कि, 'विषय विष नहीं है, विषय में निडरता विष है' इसलिए मुझसे कहते हैं कि, 'अब मुझे कुछ नहीं होगा क्योंकि मैं तो दादा का हो गया हूँ।' यह जो निडरता आ गई, वही विष है। यदि गैरज़िम्मेदार हो गया तो हो गया, खत्म। यह वैसा स्थान ही नहीं है। न तो आप आत्मा में हो और न ही फाइल में, इतनी गैरज़िम्मेदाराना बात! 'मुझे कुछ नहीं होगा।' ऐसा यह कहाँ से आया?

प्रश्नकर्ता : ठीक है। इस तरह के लोग आत्मा में भी नहीं हैं और फाइल में भी नहीं।

दादाश्री : इसमें दोनों ही जगह पर नहीं है। यह नया कहाँ से आ गया? यह जोखिम

भरा है। इसीलिए हम कहते हैं न कि 'भाई, हम आपका भय निकालने के लिए कहते हैं कि विषय विष नहीं हैं लेकिन विषय में निडरता विष है।'

आपका सिर्फ, इतना ही अभिप्राय रहना चाहिए कि इसमें मुझे कुछ नहीं चाहिए या फिर यह गलत है, यह भी अच्छा है और वह भी अच्छा है यदि ये दोनों अभिप्राय रहेंगे तो बिगड़ जाएगा। दूध और दही दोनों साथ में नहीं रह सकते। यानी क्रिया से हमें दिक्कत नहीं है, हम तो यह देखते हैं कि आपकी प्रतीति नहीं बदलनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यदि प्रतीति नहीं बदली तो वह जो चीज़ है, वह डिस्चार्ज फॉर्म में रहेगी। ठीक है?

दादाश्री : यदि प्रतीति नहीं बदली तो बहुत हो गया। आपकी जिम्मेदारी नहीं रही। उसके बाद हमारी जिम्मेदारी है। 'यह भी अच्छा है और वह भी अच्छा', यदि दोनों को अच्छा कहेंगे तो आपकी जिम्मेदारी रहेगी। ऐसा नहीं होना चाहिए, उसके बावजूद भी यदि होता रहे तो उसकी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। जब तक फाइलें हैं तब तक होता रहेगा। जब उसका हिसाब पूरा हो जाएगा तो छूट जाएगा। वह खुद भी छूट जाएगा और यह भी छूट जाएगा!

दादा के पास बैठकर समझ लेना पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : हमारा जो उल्टा आचरण है वह इसी जन्म में ज्ञान से स्टॉप (बंद) हो जाएगा या नहीं?

दादाश्री : हो भी सकता है! यदि 'ज्ञानीपुरुष' के कहे अनुसार करेंगे तो पाँच-दस वर्षों में ही हो जाएगा। अरे, एक वर्ष में भी हो सकता! 'ज्ञानीपुरुष' तो तीन लोक के नाथ कहलाते हैं, वहाँ पर क्या नहीं हो सकता? कुछ बाकी रहेगा क्या?

इन दादा के पास बैठकर सब कुछ समझ लेना पड़ेगा। सत्संग के लिए टाइम निकालना पड़ेगा।

*‘अमे केवलज्ञान प्यासी,
दादाने काजे आ भव देशुं अमे ज गाळी...’*
- नवनीत

इन्हें किसकी तृषा लगी है? तब वे कहते हैं, ‘केवलज्ञान की ही तृषा है। हम में अब दूसरी कोई तृषा नहीं रही।’ तब हम उसे कहते हैं, ‘अंदर जो तृषा है, उसकी सूक्ष्मता से जाँच तो कर।’ तब कहता है, ‘वह तो प्रकृति में रही है, मुझमें नहीं रही। प्रकृति में तो किसी को चार आना रह गई हो, किसी की आठ आना रह गई हो तो किसी की बारह आना रह गई हो, तो क्या बारह आने वाले को भगवान दंड देते होंगे?’ तब कहे, ‘नहीं, भाई तेरी जितनी कमियाँ हैं उतनी तू खत्म कर।’

अब, प्रकृति है तब तक उसकी सभी कमियाँ पूरी हो ही जाएँगी। यदि दखल नहीं करोगे तो प्रकृति कमी पूरी कर ही देगी। प्रकृति खुद की कमी खुद पूरी करती है। अब इसमें ‘मैं करता हूँ’ कहा कि दखलंदाजी हो जाएगी।

‘ज्ञान’ नहीं लिया हो तो प्रकृति का पूरे दिन उल्टा ही चलता रहता है, और अब तो सीधा ही चलता रहता है। प्रकृति कहे कि, ‘तू सामने वाले को उल्टा सुना दे’, लेकिन अंदर कहेगा कि, ‘नहीं, ऐसा नहीं करते। उल्टा सुनाने का विचार आया, उसका प्रतिक्रमण करो।’ और ज्ञान से पहले तो उल्टा सुना भी देता था और ऊपर से कहता था कि और ज्यादा सुनाने जैसा है।

इसलिए अभी जो अंदर चलता रहता है वह समकित बल है! ज़बरदस्त समकित बल है। वह रात-दिन निरंतर काम करता ही रहता है!

प्रश्नकर्ता : वह सब काम प्रज्ञा करती है?

दादाश्री : हाँ, वह काम प्रज्ञा कर रही है। प्रज्ञा खींच-खींचकर भी मोक्ष में ले जाएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, कई बार प्रकृति का फॉर्स बहुत आता है।

दादाश्री : वह तो जितनी भारी प्रकृति होगी उतना फोर्स अधिक होगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस समय ‘ज्ञान’ भी उतना ही जोरदार चलता है।

दादाश्री : हाँ, ‘ज्ञान’ भी जोरदार चलता है। यह ‘अक्रम विज्ञान’ है, इसलिए मारपीट करके, लड़कर भी ठिकाने ला देगा!

समझ की श्रेणियाँ

प्रश्नकर्ता : सामने वाला दोषित नहीं दिखें उसके लिए, ‘प्रकृति करती है’, उस समझ से काम लेता हूँ।

दादाश्री : वह ‘फर्स्ट स्टेज’ की बात है, लेकिन अंतिम बात में ऐसा कुछ भी नहीं होता है। आत्मा इसका जानकार ही है और कुछ भी नहीं है। उसके बदले मान बैठा है कि सामने वाले ने ही किया! ‘रोंग बिलीफ’ ही है सिर्फ।

प्रश्नकर्ता : एकलौते बेटे को मार डाला...

दादाश्री : वह मरता ही नहीं। जो मूल स्वभाव है, जो ‘मूल वस्तु’ है, वह मरता ही नहीं है। ये तो जो नाशवंत चीजें हैं, उनका नाश होता ही रहता है।

जगत् निर्दोष ही दिखता है। जिसकी समझ कम हो, वह हिसाब लगाकर कहता है ‘हिसाब होगा।’ नहीं तो, ‘मेरा बेटा है’ ऐसा होगा ही नहीं न!! भगवान की भाषा समझ में आ जाए, उसे तो पूरा जगत् निर्दोष ही दिखेगा न! कोई फूल चढ़ाए तो भी निर्दोष दिखेगा और पत्थर मारे तो भी निर्दोष दिखेगा! एक ने मार डाला और एक ने बचाया लेकिन दोनों निर्दोष दिखेंगे, विशेषता नहीं दिखेगी उसमें।

आपको हमारे 'ज्ञान' की समझ से समझना हो तो 'व्यवस्थित' है, 'हिसाब है', ऐसा आपको समझना पड़ेगा। उससे आगे जाओगे तब 'मूल वस्तु' समझ में आएगी। 'बचाने वाला कोई बचा ही नहीं सकता, मारने वाला कोई मार नहीं सकता। यह सब कुछ कुदरत का काम है।' 'व्यवस्थित' है, लेकिन 'व्यवस्थित' के अवलंबन के रूप में यह कौन कर रहा है? उस पूरे भाग को खुद जानता है कि सारी कुदरत की ही क्रियाएँ हैं। कुदरत जीव मात्र का हित ही कर रही है, लेकिन यह काल उसे 'डिस्टर्ब' करता है।

प्रश्नकर्ता : काल 'डिस्टर्ब' करता है, वह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : यह काल 'डिस्टर्ब' नहीं कर रहा होता न तो यह जगत् बहुत सुंदर लगता। ऐसा काल आए, तब नीचे अधोगति में ले जाता है। बाकी, कुदरत का अधोगति में ले जाने का काम नहीं है। कुदरत का स्वभाव तो निरंतर उर्ध्वगति में ही ले जाने का है।

एक काल ऐसा था कि सेठ नौकरों को दुःख देते थे, और अब नौकर सेठ को दुःख देते हैं ऐसा काल आया है! काल की विचित्रता है! नॉर्मेलिटी में हो तो सब कुछ सुंदर कहलाएगा। सेठ नौकर को दुःख ही नहीं दे और नौकर ऐसी तोड़-फोड़ ही नहीं करे।

यह तो खुद सिर्फ मान बैठा है। बाप हुआ वह भी मान बैठा है कि मैं बाप हूँ, लेकिन बेटे को दो घंटे खूब गालियाँ दे तो पता चल जाएगा कि कितने दिनों के लिए बाप है! ठंडा ही हो जाएगा न! सचमुच बाप होता, तब तो जुदा होते ही नहीं।

बात की समझ बैठते ही काम होता है

मैं जो कहना चाहता हूँ उसकी गेड़ (अच्छी

तरह समझ जाना) बैठना, यानी मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह पूरी तरह समझ में आ जाए और 'टू द पोइन्ट' पहुँच जाए, उसे मैं गेड़ पड़ी कहता हूँ। लोग नहीं कहते कि, 'अभी तक गेड़ नहीं बैठती?'

यानी कि जो 'मैं' समझाना चाहता हूँ, वही 'वस्तु' उसे उसी स्वरूप में समझ में आए, उसे 'गेड़ बैठी' कहते हैं। अब मेरा 'व्यू पोइन्ट' अलग, उसका 'व्यू पोइन्ट' अलग, इसलिए गेड़ बैठने में देर लगती है लेकिन गेड़ बैठनी चाहिए, तब काम होगा!

मैं जो कहना चाहता हूँ वह आपको पोइन्ट टु पोइन्ट 'एक्जेक्टली' समझ में आ जाए उसे गेड़ बैठना कहा जाता है। हर एक का व्यू पोइन्ट अलग-अलग होता है इसीलिए अलग-अलग तरह से समझ में आता है। हर एक को उसकी दर्शनशक्ति के आधार पर बात 'फिट' होती है।

साइन्स को समझेंगे सूक्ष्मता से

हम सोने की परिभाषा नहीं समझें और फिर पीतल को सोना कहें तब तो फिर ऐसा ही कहा जाएगा न कि हमने उसकी कीमत ही नहीं समझी? पीतल की बफिंग करने से वह सोने जैसा दिखाई देता है लेकिन सोने की परिभाषा गुण सहित समझनी चाहिए। इसी तरह से क्रोध क्या है, लोभ क्या है, आकर्षण क्या है, विकर्षण क्या है, वे पुद्गल परमाणुओं के गुण हैं। यह सब साइन्स है। साइन्स अर्थात् एक्जेक्टली समझ लेना चाहिए। बात को बारीकी से समझ लेने की ज़रूरत है। कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।

हमने जो आत्मा दिया है वह निर्लेप भाव वाला दिया है, असंग ही दिया है। अब, सिर्फ समझने की ही ज़रूरत है।

यह ज्ञान तो एक घंटे में ही दिया है और

एक घंटे में दिया हुआ ज्ञान, वह कितना बड़ा ज्ञान है, जो ज्ञान एक करोड़ वर्षों में भी प्राप्त नहीं होता, वह ज्ञान एक घंटे में ही प्राप्त हो जाता है लेकिन बेसिक (प्राथमिक) कक्षा का होता है। उसके बाद बारीकी से विस्तार पूर्वक समझ लेना पड़ेगा न? जब आप मेरे पास बैठोगे और मुझ से पूछोगे तब मैं विस्तार पूर्वक समझाऊँगा इसलिए हम कहते हैं न, सत्संग की बहुत जरूरत है। आप जैसे-जैसे यहाँ पर पूछते जाओगे, वैसे-वैसे आपको खुलासे मिलते जाएँगे। यह ज्ञान अविरोधाभासी है।

ज्ञान, दी जा सके ऐसी चीज़ नहीं है। ज्ञान तो, जो समझ देते हैं उसमें से उत्पन्न होता है। ज्ञान उत्पन्न हुआ, वह कब समझ में आता है? 'यह गलत है', वह ज्ञान कब कहलाएगा? जब अपने आप वह छूट जाए तब। छूट जाना और ज्ञान होना, जब दोनों साथ में होता है तब तक समझ में तो है कि यह नहीं होना चाहिए, नहीं होना चाहिए अर्थात् 'केवलदर्शन' यानी कि सिर्फ समझने का ही विज्ञान है। बाद में फिर केवलज्ञान में आता है।

'समझ' तो 'केवलज्ञान' की बिगिनिंग है

जिसे सिर्फ आत्मा पर ही श्रद्धा है, वह 'केवलदर्शन' है! श्रद्धा में 'केवलज्ञान' अर्थात् 'केवलदर्शन'! यदि श्रद्धा से 'केवलज्ञान' होता है तो देह सहित मुक्ति हो जाती है और ज्ञान रूप में 'केवलज्ञान' होता है तो मोक्ष होता है!

यह संसार जैसा है वैसा ही समझ में आ जाए तो, उसे केवलदर्शन कहेंगे। जाना नहीं गया तो केवलदर्शन और जाना गया तो, वह केवलज्ञान कहलाता है। पहले समझ में आ जाता है।

'पूर्ण समझ' को 'केवलदर्शन' कहा जाता है और जब वर्तन में आ जाए, तब वह 'केवलज्ञान' कहलाता है। वह पूर्ण ज्ञान, 'केवलज्ञान', पूर्णाहुति

है और 'केवलदर्शन' उसकी शुरुआत है। 'समझ' तो 'केवलज्ञान' की बिगिनिंग (शुरुआत) है।

प्रश्नकर्ता : पूर्ण समझ का अर्थ क्या है?

दादाश्री : क्षायक दर्शन। हम यहाँ पर क्षायक दर्शन देते हैं। संपूर्ण प्रतीति, संपूर्ण समझ।

केवलदर्शन अर्थात् क्षायक समकित। वह हो जाने के बाद केवलज्ञान होता है। केवलदर्शन से ज्ञान दिखाई देता है। ज्ञान दिखाई देना अर्थात् यह कि हमने पहले कुछ देखा है, 'कुछ है', ऐसा लगना केवलदर्शन है और 'यह है', ऐसा लगना केवलज्ञान है।

श्रद्धा से शुरु, वर्तन से पूर्ण

अतः अपना यह ज्ञान शुद्ध ज्ञान है। समझ भी शुद्ध है। पहले श्रद्धा में आया, अब धीरे-धीरे समझ में आएगा, ज्ञान में आएगा। खुद शुद्धात्मा ही है न!

जो जान लिया, वह फिर जब पूर्ण रूप से अपनी श्रद्धा में आएगा, उसके बाद वर्तन में आएगा। यानी कि अभी पूर्ण रूप से श्रद्धा में नहीं आया है। जैसे-जैसे श्रद्धा में आता जाएगा वैसे-वैसे वर्तन में आता जाएगा। वह पूरा प्रयोग धीरे-धीरे होगा। ऐसे एकदम से तो नहीं हो सकता कुछ! जानने के बाद उसका प्रयोग हो सकेगा न?

प्रश्नकर्ता : इसे जाना तो बहुत समय से है ही न?

दादाश्री : नहीं! उसे 'जानना' नहीं कहा जाएगा। जानना तो उसे कहते हैं कि प्रवर्तन में आए ही। अर्थात् पूर्ण रूप से जाना नहीं है। यह तो स्थूल रूप से जाना। जानने का फल क्या है? तुरंत ही प्रवर्तन में आ जाए। मतलब कि अभी तो स्थूल जाना है, उसमें से सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम होगा, तब प्रवर्तन में आएगा।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

1-4 जुलाई : पूज्यश्री के अमरिका सत्संग प्रवास की शुरुआत सान होजे सेन्टर से हुई। सान फ्रान्सिसको एयरपोर्ट पर पूज्यश्री का आगमन। विराम के बाद केलिफोर्निया और एरीज़ोना के महात्माओं के लिए 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ और महात्माओं को पूज्यश्री के दर्शन प्राप्त हुए। पहले दिन 350 मुमुक्षु और महात्माओं ने पूज्यश्री के सत्संग का आस्वाद लिया। LMHT ग्रुप ने दादाश्री के जीवन और अक्रम विज्ञान पर बनी स्क्रैपबुक पूज्यश्री को भेंट की। ज्ञानविधि में 60 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। अंतिम दिन पर महात्माओं ने अपने प्रश्नों के समाधान प्राप्त किए। समग्र कार्यक्रम का आयोजन नोर्थ केलिफोर्निया के युवा महात्माओं ने किया। महात्माओं द्वारा 'वन फैमिली' की भावना और अभेदता रखकर की गई सेवा से कार्यक्रम बहुत अच्छी तरह सम्पन्न हुआ।

7-8 जुलाई : डल्लास में 8 जुलाई को पूज्यश्री की उपस्थिति में पूज्य नीरू माँ की ज्ञानप्राप्ति का 50वीं वर्ष गाँठ मनाई गई। इस दौरान पूज्यश्री ने हवा में बलून छोड़े और बारी-बारी महात्माओं ने नीरू माँ के अमूल्य ज्ञानवाक्यों की चिट्ठी उठाई। पूज्यश्री को जब ऐसा पूछा गया कि उन्हें नीरू माँ की कौन सी बात ज्यादा स्पर्श हुई थी तो पूज्यश्री ने कहा कि 'नीरू माँ हमेशा वर्तमान में रहते थे।' सत्संग और ज्ञानविधि में 500 महात्माओं की उपस्थिति रही और 156 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

10-11 जुलाई : सालों पहले ऑस्टिन शहर में, हुए पूज्य नीरू माँ के सत्संग के बाद इस बार पूज्यश्री की उपस्थिति में ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। आत्मज्ञान के बारे में समझते हुए आप्तपुत्र सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में 150 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान 350 महात्मा उपस्थित थे। ऑस्टिन के महात्माओं के लिए पूज्यश्री का सत्संग और 'दादा-दरबार' का आयोजन हुआ।

12 जुलाई : लोवा स्टेट के डेस मोइन्स में आप्तपुत्र सत्संग में 100 मुमुक्षुओं ने दादा भगवान के अक्रम विज्ञान का परिचय प्राप्त किया।

13-15 जुलाई : नॉर्थ सेन्ट्रल अमरीका के महात्माओं के लिए इलिनोई स्टेट के मोन्टीसेलो में तीन दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ जिसका लाभ 300 महात्माओं ने उठाया। रिट्रीट के दौरान फोरेस्ट पार्क में सत्संग, गरबा और दादा-दरबार का आयोजन हुआ। सत्संग का टॉपिक था 'कषायों को विलय करने के लिए सामायिक।' पूज्यश्री ने सामायिक के बारे में विस्तार से समझाया और नियमित तौर पर सामायिक करने के लिए भी कहा।

18-19 जुलाई : पूज्यश्री बीस साल बाद कोलम्बिया। पहले दिन आप्तपुत्र सत्संग के बाद दूसरे दिन आयोजित ज्ञानविधि में 170 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। कई मुमुक्षु पंद्रह-बीस घंटे की यात्रा करके आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आए थे। स्थानीय महात्माओं को सही मार्गदर्शन की प्राप्ति हो इसलिए 'दादा-दरबार' का आयोजन हुआ जिसमें 350 महात्माओं ने पूज्यश्री के दर्शन का लाभ उठाया।

22-28 जुलाई : अमरीका के साउथ ईस्ट रीजन के जेक्सनविल सिटी में 'गुरुपूर्णिमा महोत्सव' का आयोजन हुआ जिस में तीन हजार महात्माओं ने हिस्सा लिया। इस महोत्सव में भाग लेने के लिए भारत, यू.के. जर्मनी, ब्राज़ील, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड, कनाडा और अन्य देशों से भी महात्मा आए। अमरीका के सत्संग सेन्टरों में युवाओं की विशेष भूमिका रही और उनकी मेहनत इस महोत्सव में रंग लाई। उन्होंने हॉस्पिटैलिटी की व्यवस्था की थी जिसका हेतु बुजुर्गों और ज़रूरतमंद महात्माओं की सेवा था। अलग-अलग सेन्टरों ने, इवेन्ट के लिए डेकोरेशन मटिरियल तैयार किया था और हॉल का डेकोरेशन यूथ टीम ने किया। पूज्यश्री ने 'लीडरशीप एक्सपो' की विधिवत शुरुआत की जो LMHT ग्रुप द्वारा तैयार किया गया था। यह एक्सपो महापुरुषों और ज्ञानियों पर था। महोत्सव के दौरान पूज्यश्री द्वारा आप्तवाणी-1 पर पारायण, 'अपमान पचाओ हँसते मुख से' और 'ज्ञानी की प्योरिटी' टॉपिक व जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग हुए। एक सेशन में LMHT ग्रुप के बच्चों को भी अपने प्रश्न पूछने का मौका मिला। सत्संग के साथ-साथ हर एक सेशन में LMHT/YMHT ग्रुप के लिए भी सेशन और एक्टिविटी रखी गई। गुरुपूर्णिमा के दिन

पूज्यश्री ने विधि के बाद इस मौके पर संदेश देते हुए कहा था कि 'साल भर सेवा करके ज्ञान को प्रैक्टिस बनाएँ। सेवा के दौरान विविध तरह के संयोग और एडजस्टमेंट से ज्ञान टेस्टेड होता है।' उसके बाद पूजन व आरती हुए। अगले साल 'ह्यूस्टन' शहर में गुरुपूर्णिमा मनाई जाएगी ऐसा घोषित हुआ। महात्माओं ने साउथ ईस्ट के महात्माओं द्वारा की गई निस्वार्थ सेवा की प्रशंसा की। उपस्थित सभी महात्माओं के लिए पूज्यश्री के दर्शन रखे गए। दर्शन के दौरान विधियाँ, कीर्तन-भक्ति, पद गुंजन, आरती वगैरह हुए। ज्ञानविधि में 275 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। यहाँ पर भी पूज्य नीरू माँ के 50वें ज्ञान प्राप्ति के 'ज्ञान दिन' पर विशेष प्रदर्शन हुआ जिसमें पूज्य नीरू माँ के जीवन, ज्ञान की प्रगति, गुण व सेवा के गुण प्रदर्शित हुए। सेवार्थियों को पूज्यश्री के विशेष सत्संग का लाभ प्राप्त हुआ। भारत में गुजरात के विविध सेन्ट्रों और अन्य राज्यों के सेन्ट्रों में भी आप्तसंकुल के भाईयों व बहनों की उपस्थिति में गुरुपूर्णिमा मनाई गई। विश्व के अन्य दादा सेन्ट्रों में भी गुरुपूर्णिमा मनाई गई।

31 जुलाई से 2 अगस्त : आठ साल के बाद पूज्यश्री का आगमन वापस से मेरीलैन्ड एरिया में हुआ। रॉकविल सिटी में आयोजित सत्संग के दौरान पूज्यश्री का स्वागत ढोल, पुष्पों और गरबा करके किया गया। 'दादा-दरबार' में 125 महात्माओं ने पूज्यश्री के दर्शन का लाभ उठाया। ज्ञानविधि में 120 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और कार्यक्रम के दौरान 450 महात्माओं की उपस्थिति रही। पूज्यश्री ने सत्संग के दौरान ज्ञानविधि की महत्ता, नियमित साधना, चरणविधि और रोजिदा जीवन के प्रश्नों के जवाब दिए।

3-5 अगस्त : इस साल कनाडा के टोरन्टो शहर में सत्संग और ज्ञानविधि के बजाय मिडलैन्ड में तीन दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। पूज्यश्री की उपस्थिति में रात गरबा और पूज्य नीरू माँ की रेसिपी अनुसार 'बादशाही खिचड़ी' एक विशेष आकर्षण रहा। शिविर में आए हुए 200 महात्माओं ने आप्तपुत्र-पुत्री और महात्माओं द्वारा बनाई गई 'बादशाही खिचड़ी' का आस्वाद लिया। बोट सवारी के दौरान पूज्यश्री के साथ 'दादा-दरबार' का आयोजन हुआ जिसमें पूज्यश्री के दर्शन के अलावा निकट सान्ध्य का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। मिडलैन्ड कृष्ण से पुराने महात्माओं को पूज्य नीरू माँ की पुरानी यादें ताज़ी करवा दीं। शिविर में महात्माओं को पूज्यश्री के सत्संग के अलावा इनफोर्मल समय भी बिताने को मिला जिसकी वजह से महात्माओं को प्रेम, अभेदता और दिव्य आनंद की अनुभूति हुई।

7-8 अगस्त : न्यूयॉर्क सत्संग इवेन्ट के दौरान प्रसिद्ध गणेश हिन्दू मंदिर के ऑडिटोरियम में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि में 600 महात्मा और मुमुक्षु आए थे और 170 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। 'दादा दरबार' के अंतर्गत 200 स्थानिक महात्माओं ने पूज्यश्री के दर्शन का लाभ लिया। 'टीवी एशिया' चैनलवालों ने विशेष रूप से इस इवेन्ट का कवरेज रिकार्ड किया और कम्प्युनल राउन्डअप कार्यक्रम अंतर्गत आप्तपुत्र का इन्टरव्यू ले कर प्रसारित किया।

9-12 अगस्त : पूज्यश्री का न्यू जर्सी के निपानी विस्तार में इस साल कार्यक्रम आयोजित हुआ था। महात्माओं की उपस्थिति 1200 जितनी थी, जिसमें से 277 नये मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। संयोगवश 12 अगस्त को इन्टरनेशनल यूथ डे था, वह भी मनाया गया क्योंकि इस बार युवा भाईयों व बहनों द्वारा विविध सेवाएँ उत्साह से की गई थीं। बड़ी संख्या में महात्माओं की उपस्थिति और युवाओं की सक्रिय सेवा की वजह से 'मिनि गुरुपूर्णिमा' जैसा वातावरण सर्जित हो गया। इस इवेन्ट के दौरान गरबा व PMHT सत्संग भी हुए। इस कार्यक्रम के साथ पूज्यश्री के अमरीका सत्संग का समापन हुआ।

15 अगस्त : सीमंधर सिटी (अडालज) में पूज्यश्री का आगमन सुबह सुबह चार बजे हुआ तब भी महात्मा उत्साह से पूज्यश्री के स्वागत के लिए पहुँच गए।

JJ111 के भाग रूप से लगभग 3000 महात्माओं की सहायता से परम पूज्य दादाश्री, पूज्य नीरू माँ, पूज्यश्री की मुखाकृति, 'देखने जैसी दुनिया' और दादा भगवान परिवार के लोगों की आकृति रची गई। महात्माओं ने बहुत जोरदार प्रैक्टिस करके सफलता से इस प्रोजेक्ट को पूरा किया। पूज्यश्री ने ब्लिस गार्डन में पधारकर महात्माओं के उत्साह को बढ़ाया।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

हैदराबाद	दिनांक : 22 सितम्बर	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9440697161
स्थल :	श्री कच्छ कड़वा पाटीदार समाज, 42-518/1A, स्ट्रीट नं 1, M.J. कॉलोनी, जेवियर स्कूल के सामने, मौला अली.		
हैदराबाद	दिनांक : 23 सितम्बर	समय : सुबह 9-30 से 12	संपर्क : 9885058771
स्थल :	श्री कच्छी मित्र मंडल, 3-5-141/2/A/1 & 121, स्ट्रीट नं 2, राम कोटि, किंग कोटि, एडन बाग, हैदराबाद.		
तिरुपति	दिनांक : 24 सितम्बर	समय : शाम 7-30 से 9-30	संपर्क : 8639990799
स्थल :	दक्षिण श्रीनाथ धाम, विद्या नगर कॉलोनी, श्रीकृष्णा मंदिर के पास, तिरुपति.		
तिरुपुर	दिनांक : 25 सितम्बर	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 9894048485
स्थल :	श्री श्वेताम्बर जैन मंदिर 1, महावीर कॉलोनी, सबापती पुरम, तिरुपुर.		
कोयम्बतूर	दिनांक : 25 सितम्बर	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 8870952999
स्थल :	F1 वर्धमान ग्रांड अपार्टमेन्ट्स, 8/1359, देवंगापेट, स्ट्रीट नंबर- 3, फूल मार्केट के पास, R.S. पुरम, कोयम्बतूर.		
सेलम	दिनांक : 26 सितम्बर	समय : शाम 7-30 से 9-30	संपर्क : 9443265304
स्थल :	वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, ७७, महावीर स्ट्रीट, संकर नगर, जैन मंदिर के पास, सेलम.		
तिरुचिरापल्ली	दिनांक : 27 सितम्बर	समय : शाम 7 से 9-30	संपर्क : 9043844599
स्थल :	श्री गुजराती समाज, ५२, गुजली स्ट्रीट, तिरुचिरापल्ली.		
मदुराई	दिनांक : 28 सितम्बर	समय : शाम 7-30 से 9-30	संपर्क : 9443350695
स्थल :	62, अन्ना नगर, अरविन्द आई हॉस्पिटल के पास, सारथि टेक्सटाइल के सामने, मदुराई.		
चेन्नई	दिनांक : 29 सितम्बर	समय : शाम 7-30 से 10	संपर्क : 9840072600
स्थल :	कम्युनिटी हॉल, प्रिन्स टावर, पुरासावाल्कम हाई रोड, अबिरामी थिएटर, चेन्नई.		
चेन्नई	दिनांक : 30 सितम्बर	समय : सुबह 9-30 से 11-30	संपर्क : 8438114300
स्थल :	17, सरोज नगर मेईन रोड, मंडी पक्कम, चेन्नई.		
गाज़ियाबाद	दिनांक : 20 अक्टूबर	समय : शाम 4-30 से 7	संपर्क : 9557831357
स्थल :	V3S इन्द्रलोक अपार्टमेन्ट बिल्डिंग, न्याय खंड-I, इंदिरापुरम, गाज़ियाबाद.		
नई दिल्ली	दिनांक : 21 अक्टूबर	समय : सुबह 9 से 2	संपर्क : 9810098564
स्थल :	शाह ऑडिटोरियम, राजनिवास मार्ग, सिविल लाईन्स, नई दिल्ली.		

पूज्य नीरूमाँ तथा पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर... (विदेश में)

USA-Canada + 'SAB-US' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 EST

+ 'Rishtey-USA' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST

+ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

+ 'SAB-UK' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)

+ 'Rishtey-UK' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)

+ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore + 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia + 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand + 'SAB- International' पर हर रोज दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE + 'Rishtey-Asia' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

USA-UK-Africa-Aus. + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

दादावाणी

Pujya Deepakbhai's Australia Satsang Schedule 2018

Date	Day	City	From	To	Session Title	Venue	Contact No. & Email
25-27 Sep	Tue-Thu	Sydney	All Day		Sydney Shibir	Pre-registrations only	+ 61 (0)421 127 947 sydney@au.dadabagwan.org
28-Sep	Fri		7-00 PM	9-00 PM	Satsang	Sant Nirankari Satsang Bhawan, 166 Glendenning Road, Glendenning, NSW - 2761, Australia	+ 61 (0)421 127 947 + 61 (0)402 179 706 sydney@au.dadabagwan.org
29-Sep	Sat		10-00 AM	12-30 PM	Swami Pratishtha		
29-Sep	Sat		5-00 PM	6-30 PM	Satsang		
30-Sep	Sun		4-00 PM	7-30 PM	Gnan Vidhi		
1-Oct	Mon		5-00 PM	7-30 PM	Aptaputra Satsang		
4-Oct	Thu	Perth	6-30 PM	8-00 PM	Satsang	Stirling Adriatic Center, 78 Jones Street, Stirling, WA - 6021, Australia	+61 (0)430 148 386 perth@au.dadabagwan.org
5-Oct	Fri		6-30 PM	8-00 PM	Satsang		
6-Oct	Sat		4-00 PM	7-00 PM	Gnan Vidhi		

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

7 नवम्बर (बुध) रात 8-30 से 10-30 - दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति

8 नवम्बर (गुरु), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 7-नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन

चेन्नई

8 दिसम्बर (शनि) शाम 6-30 से 9-30 - सत्संग तथा 9 दिसम्बर (रवि) शाम 4-30 से 8 - ज्ञानविधि
स्थल : अन्ना ऑडिटोरियम, भारतीय सर्जन असोसिएशन, टी.वी. टावर के सामने, चेपाक, चेन्नई.

10 दिसम्बर (सोम) शाम 6-30 से 9-30 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : उमा सूरज पेलेस, अंगलमैन कोइल स्ट्रीट, चोलाई, चेन्नई.

कार्यक्रम संबंधी तथा आवास की सुविधा के लिए संपर्क : 6369138166, 7904394945

पूज्य नीरूमाँ तथा पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर... (भारत में)

- ✦ 'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- ✦ 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दीमें)
- ✦ 'उड़ीसा प्लस' टीवी पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन'-चंद्रना पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़में)
- ✦ 'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- ✦ 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात 10 से 10-30 (गुजरातीमें)
- ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात 8 से 9 (गुजराती में)
- ✦ 'दूरदर्शन'-गिरनार हर रोज पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क: अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738, अंजार : 9924346622, मोरबी : (02822)297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557
अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, मुंबई: 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली: 9810098564, बैंगलूर: 9590979099, कोलकाता: 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947

परम पूज्य दादाश्री का 111वाँ जन्मजयंती महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

दि. 15 से 25 नवम्बर 2018

दिनांक	कार्यक्रम
15 नवम्बर (गुरु)	महोत्सव शुभारंभ - शाम 7 से 9-30
16 नवम्बर (शुक्र)	सोनेरी प्रभात - सुबह 8 से 9, इन्टरनेशनल परेड - शाम 5 से 6-30
17 नवम्बर (शनि)	MMHT सत्संग : (विवाहित भाईओं के लिए) - सुबह 10 से 11-30 WMHT सत्संग : (विवाहित बहनों के लिए) - शाम 5 से 6-30
18 नवम्बर (रवि)	PMHT सत्संग : (विवाहित महात्माओं के लिए) सुबह 10 से 11-30, शाम 5 से 6-30
19 नवम्बर (सोम)	श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा- शाम 5 से 8
20 नवम्बर (मंगल)	जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग -सुबह 10 से 11-30, शाम 5 से 6-30 श्री कृष्ण भगवान पर विशेष नृत्य नाटिका - रात 9 से 10-30
21 नवम्बर (बुध)	पारायण -सुबह 10 से 12-30, शाम 5 से 7-30
22 नवम्बर (गुरु)	जन्मजयंती के अवसर पर विधि-आरती-पूजन-दर्शन-भक्ति सुबह 8 से 1, शाम 4 से 7-30
23 नवम्बर (शुक्र)	GNC सत्संग : (बच्चों एवं युवानों के लिए) सुबह 10 से 11-30, शाम 5 से 6-30
24 नवम्बर (शनि)	सत्संग - सुबह 10 से 12-30 ज्ञानविधि (आत्मज्ञान पाने का प्रयोग) - शाम 4 से 7-30
25 नवम्बर (रवि)	महोत्सव पूर्णाहूति- रात 9 से 10-30

विशेष आकर्षण : चिल्ड्रनपार्क तथा थीमपार्क, हररोज शाम 4 से 10

सांस्कृतिक कार्यक्रम-भक्ति-नाटक, हररोज रात 9 से 10-30

स्थल : अडालज त्रिमंदिर, अहमदाबाद-कलोल हाईवे, अडालज, जि-गांधीनगर

महात्मा-मुमुक्षुओं को व्यवस्था हेतु सूचनाएँ

सूचना : 1) इस महोत्सव में भाग लेने हेतु आपको **AKonnect app** पर अथवा अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880 / 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 2 से 7 के दौरान) पर 23 सितम्बर 2018 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) महोत्सव के दौरान विविध विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।)

3) ओढ़ने-बिछाने की चदर, एयर पीलो, बैटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

'सही बात' 'समझ' में आ जाए, बस वही अपनी थ्योरी!

यह आपका ही आपको दे रहा हूँ। ज्ञान तो आपका 'खुद का' ही है। मेरा ज्ञान नहीं है। मैं तो निमित्त हूँ बीच में। अभी यह जो ठंडक बढ़ रही है, वह भी आपकी ही है। जागृति बढ़ती जाएगी, वह भी आपकी खुद की ही है। यह जागृति मेरी दी हुई नहीं है। यह सब आपका खुद का ही है! बहुत गहराई से समझो कि आप खुद ही जागृति हो और बाकी का सारा व्यवहार तो फिल्म है। उसके लिए यदि इंग्रट करने जाओगे तो यह जागृति चूक जाओगे। यह थ्योरी ऑफ एक्सोल्यूटिज्म है! क्या यह समझ में आता है आपको? यदि समझ में नहीं आए तो मना कर दो। हम तो समझने के लिए बैठे हैं। हम किसी 'थ्योरी' को 'अडोप्ट' करने के लिए नहीं बैठे हैं। 'सही बात' 'समझ' में आ जाए, बस वही अपनी थ्योरी!

- दादाश्री

